देशबान्धवी

नाटक

(स्वर्गीय श्रीमती दुव्वूरि सुब्बम्माजी के आंदोलनपरक घटनाओं पर आधारित)

मूलः

डॉ. वासा प्रभावती

अनुवाद :

डॉ. भागवतुल सीताकुमारी

प्रकाशक

वासा प्रकाशन

हैदराबाद - 500 036

देशबान्धवी

नाटक

(स्वर्गीय श्रीमती दुव्वूरि सुब्बम्माजी के आंदोलनपरक घटनाओं पर आधारित)

मूल:

डॉ. वासा प्रभावती

अनुवाद :

डॉ. भागवतुल सीताकुमारी

प्रकाशक

वासा प्रकाशन

हैदराबाद - 500 036

देशबान्धवी

नाटक

तेलुगु मूल : डॉ. वासा प्रभावती

हिन्दी अनुवाद : डॉ. भागवतुल सीताकुमारी

पथम संस्करण - नवम्बर, 2000

मूल्य : रु. 50/- पचास रूपये

प्रतियों के लिए
श्रीमती जे. मीनाक्षी
वासा निलयम, 11/2 आर.टी,
म्युनिसिपल कॉलनी, मलकपेट,
हैदराबाद - 500 036, से सम्पर्क करें।

स्थानीय केन्द्र :
4-2-771, गीता भवन,
रामकोट क्रास रोड, हैदराबाद - 500 001
फोन : 4751344.

पोट्टि श्रीरामुलु तेलुगु विश्वविद्यालय के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

मुध्रक : शार्प डॉट सर्विसेस, गांधीनगर, पेजर नं. : 9628905739

समर्पण

डॉ. के. कामेश्वरराव

एम. ए. पी.एच. डी

साहित्यभिमानी एवं मानवतावादी,

प्रमुख विद्याविद एवं सह्रदयी

चीफ जनरल मँनेजर, (इंडस्टियल डेवलपमेंट बैंक ऑफ इंडिया, मुंबई)

मेरे भ्राता डॉ. के. कामेश्वररावजी,

को कलाभिनंदन के साथ इ, .देशबानधवी. नाटक को

समर्पित कर रही हूँ।

लेखिका

Jnanpith Awardee
Dr. C. Narayana Reddy
M.A., Ph.D., D.Litt
CHAIRMAN
Andhra Pradesh State Cultural Council
Government of Andhra Pradesh
Kalabhavan, Hyderabad - 500 004.
Phone : (O) : 212832 (R) 248451

अभिनंदन

आजादी की लड़ाई भारत के इतिहास में एक अपूर्व एवं महोज्वल घटना है। महात्मागाँधीजी के समर्थ नेतृत्व में कितने ही त्यागनिरत मनीषियों ने इस आंदोलन में भाग लिया। इन्हीं के बलिदान के फलस्वरूप हम भारतवासियों ने स्वतंत्रता प्राप्त की।

गाँधीजी के नेतृत्व की स्फूर्ति से स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेकर, निडरता के साथ जेल जानेवाली प्रथम महिला श्रीमती दुव्वूरि सुब्बमाजी को बापू ने 'देशबान्धवी' के नाम से पुकारा था। ऐसी देशभक्त महिला की जीवनी से सम्बन्धित स्वातंत्र्योद्यमपरक घटनाओं के आधार पर डॉ. वासा प्रभावती ने इस नाटक की रचना की जो प्रशंसनीय है। सन् १९२१ से विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार कर, असहयोग आंदोलन, व्यक्ति सत्याग्रह, क्विट इंडिया जैसे प्रमुख स्वतंत्रता - आंदोलनों में दुव्वूरि सुब्बम्मा के सक्रिय भाग लेनेवाली घटनाओं का डॉ. वासा प्रभावती ने बड़े ही प्रभावशाली ढंग से नाटकीकरण किया। बसवराजु अप्पाराव, गरिमेल्ल सत्यनारायण, चिलकमर्ति लक्ष्मी नरसिंहम जैसे प्रमुख रचनाकारों के पद्य तथा गीत, आंदोलनों के दिनों में प्रचार में आये कितने ही अन्य गीतों को संदर्भानुसार प्रस्तुत करना समुचित लगा।

डॉ. प्रभावती ने दुव्वूरि सुब्बम्मा के पात्र को उनके सम्भाषणों एवं भाषणों द्वारा उत्तेजक ढंग से उबारा है। छोटी छोटी बातों द्वारा घटनाओं को बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। साहित्य की विविध विधाओं में सफलता पूर्वक लेखिनी चलाने वाली डॉ. वासा प्रभावती ने रंगमंच पर खेलेजाने लायक इस प्रयोजनात्मक नाटक का प्रणयन कर, अपने रचना कौशल का एक नया आयाम दर्शाया है। उनको मेरा अभिनंदन।

आशंसा

नाटक सामाजिक जीवन की सजीव प्रतिलिपि है। वह मनुष्य के सामाजिक जीवन की जटिल समस्याओं, उसकी कार्यकुशलता के घिरी जिन्दगी, अनसुलझी गुत्थियों और प्रच्छन्न सनोभावों को रंगमंच पर प्रस्तुत करने का एक सशक्त माध्यम है। अपने व्यापक सचनाफलक पर नाट्य-लेखक मानवीय अनुभवों के कार्य व्यापारों को पेश करता है जिस कारण इसकी चेतना मर्मांतक और हृदयग्रही बन जाती है।

'देशबान्धवी' छः अंकों का तेलुगु नाटक है। इसकी मूल लेखिका डॉ. वासा प्रभावती हैं। इसका हिन्दी अनुवाद डॉ. भागवतुल सीताकुमारीजी ने प्रस्तुत किया है। यह नाटक राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत है। नाटक के अध्ययन से हमें पता चलता है कि देशबान्धवी श्रीमती दुब्बूरि सुब्बम्मा एक देशभक्त महिला थी। गाँधीजी के प्रभाव से उन्होंने राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम में भाग लिया। असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह, भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेकर उन्होंने वर्षों जेल की सजाएँ भुगती। राजमहेन्द्रवरम में बालिका विद्यालय की स्थापना कर उन्होंने नारी शिक्षा का न केवल प्रचार किया अपितु नारी जागृति में योग देने का प्रयास किया। इस तरह नारियों के लिए श्रीमती सुब्बम्माजी आदर्श बन गयी।

'जिस दिन अंग्रेज हमारे देश को छोडकर, भाग जायेंगे उसी दिन मुझे विश्राम मिलेगा ऐसा माननेवाली सुब्बम्माजी ने खादी के प्रचार, विदेशी वस्त्रों का त्याग, अंग्रेजी शासन का धिक्कार आदि कार्यक्रमों द्वारा अंग्रेजों के छक्के छुडाये। अंग्रेजी पुलिस उन्हें देखकर काँपती थी।

प्रकाशम पंतुलु, पट्टाभि, बुलुसु साम्बमूर्ति, चिलकमर्ति, काशीनाथुनि नागेश्वरराव जैसे लब्ध प्रतिष्ठित नेताओं के साथ बराबरी का दर्जा पाने वाली सुब्बम्माजी ने कस्तूरबा के समान यश प्राप्त किया। महात्मागाँधी, नेहरू जैसे राष्ट्रीय नेताओं द्वारा 'देशबान्धवी' के रूप में पुकारी गयी सुब्बम्मा हमारे लिए आदर्श है।

आज का युग अनुवाद का युग है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं हे कि भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद समय की माँग है। अनुवाद के माध्यम से ही सम्पूर्ण भारतवासी एक दूसरे के निकट आ सकते हैं। स्वदेश में अनुवाद का कार्य जितनी ही अधिक और सुवयवास्थित रूप से हो रहा होता है, उसमें जन जागृति का उतना री सच्चा और आकर्षक रूप दिखाई देता है और वह दैश उतना समुन्नत और विकसित कहा जाता है। इसी परिप्रेक्ष्य में डॉ. सीताकुमारीजी

का प्रस्तुत अनूदित नाटक प्रासंगिक भीहै महात्वपूर्ण भी । प्रस्तुत रचना को पढकर मुझे यह उक्ति सार्थक प्रतीत हुई कि अनुवाद वह शक्तिशाली साधन है, जो पूरे विश्व को एक सूत्र में बांधता है।

मैं मानता हूँ कि नाटक का अनुवाद काव्यानुवाद से किसी प्रकार सहज और सरल न होकर दुष्कर और उलझनपूर्ण होता है। ऐसे कार्य का निर्वाह अनुवादिका ने रुचि और मनोयोग से किया है। मूल विषय का प्रतिपादन बख़ूबी और अदेक्षित रूप में है। ऐसा लगता है कि लेखिका अनुवाद में पारंगत है। वह मूल और लक्ष्य भाषा अर्थात तेलुगु एवं हिन्दी का विशिष्ट ज्ञान रखती हैं। प्रस्तुत नाटक को पढ़ते हुए मैंने ऐसा महसूस किया कि यह नाटक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, और उसके प्रभाव को जानने के इच्छुक पाठकों को अत्यन्त उपयोगी सिध्द होगा।

चूंकि अनुवाद को भारतीय भावात्मक एकता की साधना के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है अतः मुझे आशा ही नहीं विश्वास है कि डॉ. सीताकुमारीजी अपनी सशक्त लेखिनी द्वारा इस भावना को बल पहुँचाने का सतत प्रयत्न करेंगी और माँ भारती की सतत सेवा करती रहेंगी। परम सुंदर और उपयोगी नाटक के अनुवाद हेतु मैं डॉ. सीताकुमारीजी को साधुवाद एंव बधाई देता हूँ। डॉ. सीताकुमारीजी की भाषा परिमार्जित, प्रवाहपूर्ण तथा विषय प्रतिपादन में समर्थ है। पूरी आशा है कि हिन्दी सँघ इस ग्रंथ का स्वागत करेगा।

राष्ट्रीय चेतना से देश को परिव्याप्त करने के लिए इस ग्रंथ का प्रचार होना चाहिए। यह ग्रंथ जब राष्ट्रीय धरातल पर प्रचीरित होगा तब देश में भावात्मक एकता का विकास होगा, राष्ट्रीय शील में वांछित परिवर्तन उत्पन्न होगा। बलिदान की भावना विकसित होगी।

हैदराबाद
दि. 9-11-2000

प्रोफेसर टी. मोहन सिंह
हिन्दी विभाग
प्रधानाचार्य-कला एंव समाज विज्ञान
उस्मानिया विश्वविद्यालय
हैदराबाद - 7

मेरे विचार ...

पूर्वी गोदावरी जिले के राजमेण्ड्री में मेरा जन्म हुआ। पश्चिमी बंगाल के मेदिनीपूर जिले के खड़गपूर में पली और बड़ी हुई। पाठशाला में हिन्दी, गुजराती, पंजाबी, मराठी, तमिल, कन्नड जैसी अनेक भाषा-भाषी छात्राओं तथा अध्यापकगण के सम्पर्क में बचपन बीता। अतः बहुभाषी वातावरण में पनपने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मेरी माताजी हर मौके पर एकाध छन्द अवश्य सुनाया करती थीं। अनायास ही कविता में मेरी रुचि बढने लगी।

संस्कृत का मैंने विशेष विषय के रूप में अध्ययन किया। अध्यापन के क्षेत्र में कदम रखने के पश्चात कुछ छात्र-छात्राओं की गलतियों का मूल कारण जानने के लिए मुझे उर्दू लिपि सीखनी पड़ी।

मेरी आधे दर्जन से अधिक तेलुगु कहानियाँ आन्ध्रप्रभा, पत्रिका, श्रवंती में छप चुकी हैं। आकाशवाणी विजयवाडा केन्द्र से मेरी हिन्दी कविताएँ प्रसारित हुई हैं। श्रीमती जीलानी बानोजी का उर्दू उपन्यास ऐवान-ए-गजल का मेरा तेलुगु अनुवाद नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया द्वारा प्रकाशित हुआ है।

अपने जीवन में जो भी मौका मुझे मिला, मैंने उसे चुनौती के रूप में अपनाया। इसी सिलसिले में जब 'देशबान्धवी' नाटक का हिन्दी में अनुवाद करने का सुअवसर मिला तो उसे भी मैंने सहर्ष स्वीकारा। डॉ. वासा प्रभावतीजी के साथ वनिता महा विद्यालय में काम करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। मिलनसार व्यक्तित्व, लचीलापन, दृढ़ संकल्प, सहज भावाभिव्यक्ति, हँसमुख प्रभावतीजी की चन्द विशेषताएँ हैं। साहित्य की विविध विधाओं में सिद्धहस्त प्रभावतीजी के लगभग ४० ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। वे अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हो चुकी हैं।

डॉ. वासा प्रभावतीजी ने इस नाटक के अनुवाद के संदर्भ में मुझे पूरी छूट दे रखी थी, लतः अनुवाद जैसा जटिल कार्य भी मेरे सरल बन गया जिसके लिए उन्हें मेरा हार्दिक आभार।

डॉ. भागवतुल सीताकुमारी

आभार

अनेक महिलाओं ने देश की आजादी के लिए अपनी जान की बाजी लगाकर, जमीन - जायदाद की परवाह न कर, पुरूषों के बराबर स्वातंत्र्य-संग्राम में भाग लिया जिसके फलस्वरूप भारत स्वतंत्र हुआ। मेरे पिताजी ने स्वतंत्रता आंदोलन में मुख्य भूमिका निभाई। उन्होंने विदेशी वस्त्रों की होली जलाई और दूसरों से जलवाइ भी। स्वयं खादी वस्त्र पहनवा ही नहीं बल्कि दूसरों को भी खादी पहनने की प्रेरणा दी। जब तक देश आजाद नहीं हुआ तब तक वे गाँधीजी के शिष्य बन आंदोलनकारी के रूप में अपने प्राणों की परवाह न कर लड़ते रहे। जेल गये। लाठियों की मार सहे। उनकी रुमाल से लकर चादर तक खादी ही के थे। यह एक बडी दीक्षा थी जो उन्होंने ले रखी थी। सन् १९७५ में मेरे पिताजी नें अंतिम साँस ली और तब तक उनकी दीक्षा जारी रही। उन्होंने बहुत दान-धर्म किया। चाहे कोई भी आये और किसी भी तरह की सहायता मांगे, उन्होंने कभी नकारा नहीं। आंदोलन के प्रचार के सिलसिते में जब स्वर्गीय जयप्रकाश नारायण दम्पती, पूर्वी गोदावरी जिले के हमारे .आत्रेयपुरम. गाँव में आये, हमारे घर में ही उनके आतिथ्य का प्रबन्ध किया गया। उस दिन मेरे पैदा हुए २१ दिन हुए थे। मेरे पिताजी ने जयप्रकाश नारायणजी की धर्मपत्नी प्रभावती देवीजी के ही नाम पर मेरा नामकरण किया। हो सकता है कि इस वजह से मुझे अपने देश से प्रेम तथा देशभक्तों के प्रति श्रद्धा है।

मेरे बाल्यकाल में ही हमारे आत्रेयपुरम में गाँव के सभी बुजुर्गों ने मिलकर हाईस्कूल की स्थापना की थी। अत: मुझे पढनेका अवसर मिला। पाठशाला एंव पुश्तकालय की स्थापना में मेरे पिताजी तथा चाचाजी का बड़ा योगदान रहा। हमारे गाँव में जब भी कोई महान व्यक्ति आते तो उनका स्वागत करते हुए देशभक्ति गीत गाना, उनकी आरती उतारना मेरा ही काम होता। जिन दिनों बालिकाओं का घर से बाहर निकलना बुरा माना जाता था, मै अपनी चचेरी बहन के साथ हाईस्कूल में पढने जाती थी, अपने पिताजी के साथ चुनाव के प्रचार में भाग लेती थी। इतना ही नहीं आत्रेयपुरम में एक महिला समाज की स्थापना कर स्वयं (मै) सचिव बन, गाँव में हमने हलचल मचादी। मैं जब छोटी थी, दुव्वूरि सुब्बमाजी जब भी हमारे गाँव आती थीं तो हमारे घर अवश्य आतीं। इसी कारण मुझे उन्हें देखने का सौभाग्य मिला। लेकिन इतने लम्बे अरसे के बाद भारत स्वातंत्र्य स्वर्णोत्सब के संदर्भ में उनकी जीवनी के आधार पर नाटक लिखने की आकांक्षा जागृत हुई और मेरी कामना पूरी हुयी। रंगमंच पर खेंलेजाने पर अनगनित दर्शकों नें साधुवाद दिया।

अनुवाद प्रक्रिया साधारण विषय नहीं है। ऊपर से नाटक का संभाषणानुवाद और भी जटिल है। मेरे इस नाटक का मेरी अत्यंत आत्मीय लेखिका एवं कवयित्री डॉ. भागवतुल सीताकुमारीजी ने हिन्दी में अनुवाद किया, जो अनुवाद न लगकर मौलिक रचना का प्रतिभासित हो रहा है, इसके लिए मैं उनहें धन्यवाद देती हूँ। सुमधुर शब्दों में मेरे इस नाटक पर अपने अमूल्य विचार व्यक्त करने वाले मेले गुरुवर ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता, पद्मभूषण, सांसद, ए.पी.सांस्कृतिक परिषद के चेयरमन आचार्य श्री सी. नारायण नेड्डीजी के प्रति मैं हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ।

इस हिन्दी नाटक की प्रति पढ़कर अपने अमूल्य विचार, सुन्दर शब्दों में प्रस्तुत करनेवाले सहृदयी उस्मानिया विश्वविद्यालय के प्रधानाचार्य प्रोफेसर टी.मोहन सिंगजी को हार्दिक आभार व्यक्त करना मैं अपना परम कर्तव्य मानती हूँ। स्वर्गीय दुव्वूरि सुब्बम्माजी की तस्वीर से कवर पेज सजाकर समयोचित सुझाव देनेवाले, कलाकार, साहित्यकार, सहृययी श्री शीला वीर्राजुजी को कृतज्ञता ज्ञापन करती हूँ। पुस्तक प्रकाशन में आर्थिक सहयोग देनेवाले तेलुगु विश्वविद्यालय के अधिकारियों को तथा सही समय पर सुन्दर छपाई के साथ पुस्तक प्रस्तुत करनेवालों को मै धन्यवाद समर्पित करती हूँ।

डॉ. वासा प्रभावती

"देशबान्धवी दुव्वूरि सुब्बम्माजी"

१५ नवम्बर, सन् १८८० में पूर्वी गोदावरी जिले के रामचन्द्रपुरम तालुका के द्राक्षारामम नामक गाँव में एक सनातन ब्राह्मण परिवार में आपका जन्म हुआ। पिता मल्लादि सुब्बावधानीजीने, अपनी बेटी का विवाह, बाल्यकाल में ही दुव्वूटि वेंकट सुब्बय्याजी के साथ किया। सुब्बम्माजी ने राजमण्ड्री तालुका के कडियम नामक गाँव में अपने ससुराल में कदम रखा। थोड़े ही समय में उनके पति का निधर्न हो गया औट वे टूट-सी गईं। संतानहीना सुब्बमाजी सन् १९२१ में पहली बार काकिनाड़ा में सम्पन्न होनेवाले राजनैतिक अधिवेशनों में भाग लेने के लिए निकल पड़ीं। टंगुटूरि प्रकाशम पंतुलुजी के नेतृत्व में बुलुसु साम्बमूर्तीजी द्वारा प्रतिपादित सम्पूर्ण स्वातंत्र्य के लक्ष्य का समर्थन करती हुई सुब्बमाजी के भाषण ने लोगों को अचंभे में ड़ाल दिया। उस घ्टना ने उनके जीवन को पूरी तरह बदल दिया। उसी समय से वे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में मुख्य भूमिका निभाने लगीं। जनवरी १९२२ में गांधीजी द्वारा आरंभ किये गये असहयोग आंदोलन में उन्होंने मुख्य भूमिका निभाई। उन दिनों, भारत में आंदोलनों में भाग लेने वाली स्त्रियों की संख्या बहुत कम थी। कहा जाता है कि उसी कारण उस समय के जिलाधीश जी.टी.एच. ब्रौकन ने उन्हें कैद कर जेलखाने में ड़ालने के लिए बहुत आगा पीछा किया था। लेकिन बिजली की गड़गड़ाहट जैसे उनके गंभीर भाषणों से घबराकर, मुकदमा चलाकर उन्हें राजमण्ड्री के सेंट्रल जेल में कैद कर दिया गया। क्षमा याचना पर उन्हें रिहा कर देने की बात हुई लेकिन उन्होंने एक न सुनी। साल भर जेल की सजा भुगत कर रिहा हुईं। गाँधीजी के आदेशानुसार वे खादी-वस्त्रों की गठरी सर पर लिए गाँवों में घूमती हुई बेचतीं और इस तरह प्राप्त धन, पार्टी फण्ड में जमा करतीं। स्त्रियों में सनातन प्रवृत्ति, विवेक एवं विज्ञान जागृत करने के निमित्त उन्होंने राजमहेन्द्रवरम् में बालिका - पाठशाला स्थापित कर, राष्ट्रीय विद्यालय के रूप में उसका संचालन किया।

उन्होंने सन् १९३० में नमक सत्याग्रह में भाग लिया और एक साल तक रायवेल्लूरु - जेल में रहीं। सन् १९३२ में व्यक्ति सत्याग्रह में, १९४०, १९४२ में भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भाग लेकर, जेल की सजाएँ भुगतकर स्त्रियों के लिए आदर्श बन गयीं।

देशबान्धवी

नाटक

देशबान्धवी

नाटक - प्रारंभ

भरतखण्डम्बु चक्कनि पाडियाउ
हिन्दुवुलु लेगदूडलै येड्चुचुंड
तेल्लवारनु गड्डुसरि गोल्लवारु
पितुकुतुन्नारु मूतुलु बिगियगट्टि,

(भारत की पावन भूमि एक अच्छी दुधारी गाय है। हिन्दू बेचारे भोले-भाले बछड़ों की तरह बिलख रहे हैं। उनके भोलेपन का नजायज फायदा उठाते हुए चालाक गोरे आबाद हो रहे हैं।)

परदे के पीछे से गीत सुनाई दे रहा है। कार्यकर्ता पुरुष का प्रवेश

पुरुष : दास्य श्रृंखलाओं से पीडित भारतमाता का कैसा सजीव चित्रण किया गया है। न जाने कौन है वह महान् कवि ! भारत की इस पावन भूमि में पैदा होनेवाले उस महाकवि का जन्म सार्थक हुआ। आहा ! इतनी मीठी आवाज में गानेवाली वह देशभक्त महिला कौन है ? अपने मधुर गायन से भारतमाता की आरती उतार रही है।

कार्यकर्ता स्त्री का प्रवेश

स्त्री : कोई और नहीं ! वह देशप्रेमी अपनी दुव्वूरि सुब्बम्मा के सिवा और कौन हो सकता है ? राजमहेन्द्रवरम् के पास के कड़ियम गाँव की रहनेवाली हैं। पूर्वी गोदावरी ज़िले के द्राक्षारामम् निवासी मल्लादि सुब्बावधानीजी की प्रियपुत्री हैं।

पुरुष : क्या छोटी उम्र में ही सुहाग के उजड़ जाने से, सामाजिक दुराचार का शिकार बनी माई सुब्बम्मा ही है ? चेल्लपिल्ला जी की शिष्या बन महाभारत, श्रीमद्भागवत के छन्दों का मधुर गान करनेवाली वही माई सुब्बम्मा है क्या ? अब देशभक्ति से ओतप्रोत यह गायन कैसा ? आखिर कौन है उस छन्द की रचना करनेवाला ?

स्त्री : वे महान् कवि चिलकमर्ति लक्ष्मी नरसिंहम ही हैं ! जब विपिन चन्द्रपाल ने आन्ध्र प्रांत का दौरा किया था, चिलकमर्तिजी ने ही उनके भाषणों का अनुवाद

किया था। उस संदर्भ में उस देशभक्त के मुँह से फूटा था यह छन्द। तुम होश में तो हो ? उन गोरों के,यमकिंकर जैसे पहरा देनेवाले कुत्ते एवं पुलिस की लाठियाँ तुम्हारी हड्डी-पसली एक कर देते तो हिन्दुस्तान में पैदा हुए तुम्हारे मुँह से भी वही छन्द निकलता। बकवास और आवारागर्दी के सिवा तुम क्या जानो देशभक्ति क्या होती है ?

पुरुष : यह ठीक है कि मुझे घूमने और बकने के सिवा देशभक्ति के बारे में कुछ नहीं मालूम। लेकिन मैं उन देशभक्तों का भक्त हूँ जो भारतमाता की दास्य श्रृंखलाओं को तोड़ फेंकने के लिए जान की बाजी लगाकर लड़ रहे हैं। आखिर मैया सुब्बम्मा के कंठ से शंखध्वनि की भाँति सुनाई देनेवाले उस पद्य-पठन के बारे में तो बताया ही नहीं।

स्त्री : तभी तो कह रही हूँ कि इस स्वतंत्रता संग्राम रूपी महायज्ञ के बारे में तुम कुछ नहीं जानते। मामा चिलकमर्तिजी के प्रोत्साहन पर अपनी माई काकिनाड़ा में आयोजित राजनीतिक समारोहों में गई थीं। उस समारोह में कितने ही नेता एवं देशभक्त विराजमान थे। टंगटूरि प्रकाशम पंतुलुजी उस अधिवेशन के अध्यक्ष थे। सुब्बम्मा आश्चर्यचकित हो सबको देखने लगीं। बुलुसु साम्बमूर्तीजी ने लोगों के सामने ''सम्पूर्ण स्वातंत्र्य ही हमारा लक्ष्य है'', प्रस्ताव रखा। उपस्थित नेतागण एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। उस प्रस्ताव को सुनकर सुब्बम्माजी का शरीर पुलकित हो उठा। उनका हृदय देशभक्ति से भर गया। ''हमें संपूर्ण स्वातंत्र्य चाहिए। तब तक हम सब एक हो अपनी लड़ाई जारी रखेंगें,'' उन्होंने महत्वपूर्ण भाषण दिया।

पुरुष : जल्दी बताओ तब क्या हुआ ?

स्त्री : एक स्त्री जब महाकाली बन जाय तो होगा क्या ? प्रकाशम पंतुलुजी तथा पट्टाभि सीतारामय्याजी ने भी उनका समर्थन किया। प्रस्ताव पारित हुआ। वे पंजाब पार्वती की तरह भड़क उठीं। उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। ''वंदेमातरम'', कहती हुई आगे बढ़ गई।

पुरुष : तो तुम क्यों रुक गई ? खादी की साड़ी पहन उन देशभक्त महिला के साथ निकलोगी नहीं ? अपनी गृहस्थी एवं छोटे बच्चे के खयाल से घबरा तो नहीं गयी ?

स्त्री : मैं क्यों ड़रने लगी ? बच्चे को गोद में लिए ही निकल पडूंगी ! रही गृहस्थी की बात, पति अपनी जगह और मैं अपनी राह पर।

पुरुष : सबका रास्ता एक है ! आन्दोलन का।

(परदे के पीछे से)
"वंदेमातरम् - वंदेमातरम"
(अनेक आवाजें सुनाई दे रही हैं।)

भरतखण्डम्बु चक्कनि पाडियाउ
हिन्दुवुलु लेगदूडलै येड्चुचुंड
तेल्लवारनु गड्डुसरि गोल्लवारु
पितुकुतुन्नारु मूतुलु बिगियगट्टि

(लाठियों, बंदूकों की आवाजें, पुलिस की सीटियाँ और जूतों की आहट आ रही है)

स्त्री : देखो वह सुब्बम्माजी की ही आवाज है। उन देशभक्त अहिंसामूर्तियों को पापी परायी पुलिस बेतहाशा पीट रही है। बंदूकों से उनकी जान ले रही है। कैसी दारुण घटना है ! चलो हम भी समिधा बने उस महायज्ञ में !

पुरुष : भारत की पवित्र भूमि में जन्म लेने के नाते मैं अपने इस शरीर को ही नहीं बल्कि अपना सर्वस्व देशार्पण करूँगा। जल्दी करो जल्दी सुब्बम्माजी का दर्शन करेंगे।

वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

समाप्त

देशबान्धवी

नाटक - प्रथम अंक

माताओं ! खादी ही पहनो

एक सड़क के बीचों बीच
(परदे के पीछे से)

(वंदेमातरम् - वंदेमातरम् - वंदेमातरम् - वंदेमातरम् लोगों के नारे, जूतों की आहट, लोगों के दौड़ने की आवाज, सीटियाँ एवं लाठियों की आवाजें आ रही हैं।

दुव्वूरि सुब्बम्मा, उनके पीछे दो स्त्रियों का प्रवेश। सुब्बम्माजी कछोटा मारे खादी की साड़ी पहनी हुई हैं। सर पर आंचल.हाथ में लाठी, कंधे पर खादी की झोली, कुछ लंगड़ती हुई चलती हैं। लगभग चालीस साल की उम्र है, सर पर खादी साड़ियों की गठरी है। उनके साथ पेद्दाड सुब्बम्मा और चल्लपल्लि सीतादेवी हैं। दोनों खादी की साडियाँ पहनी हुई हैं। सर पर पर कपड़ों की गठरियाँ।)

सुब्बम्मा : **भरतखण्डम्बु चक्कनि पाडियाउ**
हिन्दुवुलु लेगदूडलै येड्चुचुंड
तेल्लवारनु गड्डसरि गोल्लवारु
पितुकुतुन्नारु मूतुलु बिगियगट्टि
(अभिनय के साथ गाती हुई प्रवेश करती है)

दोनों स्त्रियाँ : तेल्लवारनु गड्डसरि गोल्लवारु - पितुकुतुन्नारु मूतुलु बिगियगट्टि !
(अभिनय के साथ गाती हैं।)

सुब्बम्मा : वंदेमातरम्

दोनों स्त्रियाँ : वंदेमातरम्-वंदेमातरम्

सुब्बम्मा : 'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी !' बड़ों का कहना है कि समस्त भोगों से भरपूर उस स्वर्ग से भी जननी और जन्मभूमि महान हैं। आज हमारी जन्मभूमि की रक्षा करने की नौबत आई है। गोरा अनैतिक है, दुष्ट है, बदमाश बनकर हमारे भारतवासियों का दमन कर मस्ती से झूम रहा है। हमारी रोटी छीनकर, आँखों में धूल झोंककर हमारे देश की सारी संपत्ति लूट रहा है। आन्ध्र की वनिताओं ! आर्द्रहृदयी बहनों ! भारतमाता की बेड़ियाँ तोड़ फेंकने के लिए कार्यदीक्षारत हो आगे बढ़ो !

दो स्त्रियाँ : आन्ध्र वनिताओं ! आर्द्रहृदयी बहनों ! भारतमाता की बेड़ियाँ तोड़ फेकने के लिए कार्य दीक्षारत हो आगे बढो ! वंदेमातरम् ! वंदेमारतम् - वंदेमातरम् !

सुब्बम्मा : माताओं ! आन्ध्र-महिलाओं ! देश की परिस्थिति निहारिये। कठिनाइयों का सामना कर रही जनता को देखिये। एक ओर भुखमरी, दूसरी ओर सामूहिक हत्याकाण्ड। सब एक होकर इन गोरों को मार भगाइये।

राष्ट्रीय नेता गाँधीजी की पुकार सुनकर उनके साथ हो लीजिये। खादी का प्रचार कीजिए। भारतमाता की जंजीरों को तोड़ ड़ालिए।

दो स्त्रियाँ : राष्ट्रीय आंदोलन का साथ दीजिए। जी जान से खादी का प्रचार कीजिए।

वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

सुब्बम्मा : आन्ध्र - महिलाओं ! वीर माताओं ! विदेशी वस्त्रों को जला डालिए। खादी वस्त्र ही धारण कीजिए। पराये शासकों का पीछा कीजिए, उन्हें मार भगाइये।

दो स्त्रियाँ : आन्ध्र महिलाओं ! वीरमाताओं ! विदेशी वस्त्र ज़ला डालिए। खादी वस्त्र ही पहनिए। विदेशी शासकों को मार भगाइये।

(परदे के पीछे से गीत सुनाई दे रहा है)

तुम्हे लाज नहीं ! शर्म नहीं ?
भूखे-प्यासे बिलखते गरीब जब
विदेशी वस्त्र पहन, तितलियों से
घूमते तुम्हें लाज नहीं ? शर्म नहीं ?

सुब्बम्मा : (बडे चाव से वह गीत सुन रही है) सीतम्मा ! सुब्बम्मा ! वह गीत सुनकर मेरा शरीर पुलकित हो रहा है। मेरा मन विजय सूचित कर रहा है। उत्साह दुगुना हो रहा है।

दो स्त्रियाँ : वह गीत सुनकर हमारा शरीर रोमांचित हो रहा है। उमंग से भरे मन झूम रहे हैं। आहा ! हमारा जन्म धन्य हो गया है।

"विदेशी वस्त्र पहन, तितलियों से
घूमते लाज नहीं ? तुम्हें शर्म नहीं ?"

(अभिनय करती हुई दोहराती हैं) सुब्बमाजी की ओर घूमकर.

पहली स्त्री : माई सुब्बम्मा ! सुबह से न जाने कितनी जगह घूम आई हो। न जाने कितने भाषण दे चुकी हो ! सिर पर यह गठरी अलग। उसे उतारकर नीचे रखूँगी। यहाँ आकर तानिक सुस्तालो मैया।

दूसरी स्त्री : पहले गठरी तो उतारने दो ! भाषण देना छोड़कर जरा आराम तो करलो ! हमें डर है कि इस कडी धूप में तुम कहीं बेहोश न हो जाओ।

(गठरी उतारकर नीचे रखती है)

सुब्बम्मा : मूझे आराम कहाँ ! जिस दिन वह परदेशी हमारा देश छोड़ कर भाग जाएगा तभी मुझे विश्राम मिलेगा। यह धूप और बारिश मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। इस गठरी की सारी साड़ियाँ जब बिक जायेंगी तब मिलेगा मुझे आराम। आन्ध्र की सारी महिलाएँ जिस दिन खादी की साड़ियाँ पहनेंगी उस दिन मिलेगा मुझे विश्राम।

(लाठी को बगल में रख कर, मंच पर एक ओर नीचे बैठ जाती हैं)

सुब्बम्मा : आप लोग भी यहाँ बैठ जाइये।

(वे दोनों स्त्रियाँ भी बगल में बैठ जाती हैं। तीनों आंचल से पसीना पोंछती रहती हैं)

(परदे के पीछे से)

वंदे मातरम् - वंदे मातरम्

सीटियाँ, दौड़ने की आहट, लाठियों के चलने की आवाजें आ रही हैं।

सुब्बम्मा : सीतम्मा ! सुन रहीं हैं न ? हमारी खुशी पलभर भी टिक न सकीं। देखो अहिंसाव्रतधारी हमारे कार्यकर्ताओं को निर्दयी पुलिस कैसे मार-मारकर अधमरा कर रही है। हाय ! घोर अन्याय !

दोनों स्त्रियाँ : हाँ माई ! कैसा अन्याय है ! इन अहिंसाव्रतधारियों को मारने के लिए न जाने उनके हाथ कैसे उठते होंगे ?

(हाथों में लाठी लिए दो पुलिस आते हैं)

पुलिस १ : कपडों की गठरी सर पर लादे, हाथ में लाठी लिए, वह सफेद पोशाक वाली स्त्री कहाँ है ? उन दोनों औरतों को साथ लिए फिरनेवाली स्त्री कहाँ है।

(रंगमंच पर इधर-उधर ढूँढते रहते हैं)

पुलिस २ : सर पर कपडों की गठरी लादे लाठी हाथ में ले घूमनेवाली वह गठरीवाली कहाँ है ? कहाँ है ?

(रंगमंच पर इधर-उधर ढूँढते हुए लाठी से जमीन पर ठोकता रहता हैं)

पुलिस १ : कंधे पर झोली लटकाये, हाथ में लाठी, सर पर गठरी लिए लंगड़ती हुई

घूमनेवाली वह औरत कहाँ है ? कहाँ हैं वे तीनों औरतें ? कहाँ हैं ?

(इधर -उधर ढूँढता रहता है)

पुलिस २ : अभी-अभी इस ओर आये थे। इसी बीच कहाँ-चली गई होंगी ? वह सफेद कपडेवाली स्त्री कहाँ है ? साड़ियों की गठरियोंवाली औरतें कहा है ?

(लाठी से आवाज करते हुए इधर-उधर घूमंता रहता है।)

पुलिस १ : अब कहाँ दिखेंगी ? हमारी लाठियों को देखकर मारे डर के कहीं भाग गई होंगी। हम पुलिसवालों को देखते ही हर कोई थर-थर काँपने लगता है। इन लाठियों के सामने खड़े होने की हिम्मत किसमें होगी ? लाठी की मार सर पर पड़ते ही सर तो फटेगा ही ! कमर टूटेगी ही ! इसीलिए भाग गई होंगी।

पुलिस २ : अभी इसी ओर आयी थीं। मैनें अपनी आँखों से देखा है। तीनों ने सफेद साड़ियाँ पहन रखी हैं। कहाँ गायब हो गयी होंगी ? भूत तो नहीं थे ? कहते हैं कि भूत पल भर में गायब हो जाते हैं।

पुलिस १ : तुम्हारा सिर !दिन दहाड़े भूत क्या ? हमारी लाठियों के डर से कहीं भाग गई होंगी। अब बाहर नहीं निकलेंगी। भाषण देते हुए औरतों को भड़कायेंगी नहीं। अब खादी कपड़े बेचेंगी ही नहीं।

पुलिस २ : क्या यह सच है ? तुम्हारी बातों पर कैसे विश्वास करूँ ?

पुलिस १ : सच है ! मेरी बात पर विश्वास नहीं करोगे तो भला क्या करोगे ?

पुलिस २ : वो देखो ! वहाँ कोई है। कौन है वहाँ। कौन है ? (सीटी बजाता है)

पुलिस १ : कौन है वहाँ ?

सुब्बम्मा : सर पर गठरी रख, हाथ में लाठी ले उठ खड़ी होती है।

दोनों स्त्रियाँ : वे भी गठरियों के साथ उठ खड़ी होती हैं।

सुब्बम्मा : वंदेमातरम् - वंदेमातरम् - वंदे मातरम् - वंदे मातरम्

(वहाँ से परदे के पीछे चली जाती हैं)

पुलिस १ : वो देखो चली जा रही हैं। पकड़ो ! पकड़ो।

(सीटी बजाते हुए भागता है।)

पुलिस २ : पकड़ो ! पकड़ो !

सीटी बजाते हुए उसके पीछे भागता है।

इधर से सुब्बम्मा तथा दोनों स्त्रियाँ उसी वेष-भूषा में पुनः प्रवेश करती हैं।

स्वाभिमानी वनिताओं ! आन्ध्र की महिलाओं ! वीरमाता रानी रुद्रमदेवी, वीरपत्नीझाँसी लक्ष्मीबाई की जन्मभूमि है यह देश ! पौरुष का प्रतीक है यह देश। निर्लज्ज अंग्रेज हमारी ताकत और सामर्थ्य को मिट्टी में मिलाकर, हमारे मुँह पर ताला, हाथों में बेडियाँ डाल, गुलाम बनाकर हमें नचा रहा है। बगावत करनेवालों को बेतहाशा पीट रहा है। बंदूकें चलाकर मौत के घाट उतार रहा है। हथकड़ियाँ पहनाकर जेलखानों में कैद कर रहा है। कैदखाने से हमें डर कैसा ? भगवान श्रीकृष्ण ने कैदखाने में ही तो जन्म लिया था। हम सबके घर अगर जेल बन जाएँ तो भी डरने की जरूरत नहीं। हम सब एक हो जाएँ तो यह फिरंगी हमारा क्या बिगाड़ सकता है ? आइये ! विदेशी वस्त्रों को त्याग दीजिए। बेहतरीन खादी की साडियाँ पहनिये। आइये ! आइये ! खादी की इन सभी साडियों को खरीदिये। हमारी गठरियों को खाली कीजिए। इनके द्वारा प्राप्त धन ही हमारे राष्ट्रीय आंदोलन का सहारा है। आइये ! आइये ! माताओं आइये ! खादी की साड़ियाँ ही पहनिये। (गठरी खोलकर ज़मीन पर रखकर साड़ियाँ दिखाने लगती है)

सुब्बम्मा : वंदेमातरम् - वंदेमातरम् - वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

पहली स्त्री : माताओं ! बहनों ! आइये ! ज्यादा वजन के कारण इस गठरी के ढोने से माई सुब्बम्मा का सर झुका जा रहा है। आइये !साड़ियाँ सारी खरीद लीजिए। माई का भार हल्का कीजिए। भारतमाता की रक्षा कीजिए। (गठरी नीचे रखकर खोलती है)

दूसरी स्त्री : माताओं ! आन्ध्र वनिताओं ! माई सुब्बम्मा का कष्ट निहारिये ! खादी साड़ियाँ सारी खरीदकर पहनिये। (गठरी नीचे रख खोलने लगती है)

(परदे के पीछे से गीत सुनाई दे रहा है)

" विदेशी वस्त्रों की चिता सजाइये !
माताओं ! आन्ध्र-महिलाओं ।
खादी साड़ियाँ ही पहनिये
विदेशी वस्त्रों की चिता सजाइये ।
पीछा करते हुए फिरंगियों को मार भगाइये
माताओं ! बहनों !
वीरमाताओं ! आन्ध्र-महिलाओं !
विदेशी वस्त्रों की चिता सजाइये ! "
(परदे के पीछे - स्त्रियाँ)

" **माई** सुब्बम्मा ! इधर आओ ! उन गठरियों को लेकर इधर आओ । आजसे हम विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार करेंगी । खादी वस्त्र ही पहनेंगी । सारी खादी की साड़ियाँ हमीं खरीदेंगी ! "

सुब्बम्मा : आहा ! कितना अच्छा दिन है ! कितनी अच्छी खबर सुनी है। मेरा शरीर खुशी से झूम रहा है। आज मेरा जन्म धन्य हुआ है। मेरे आन्ध्र की महिलाओं ! प्रतिज्ञा कीजिए कि आज से आप सब खादी वस्त्र ही पहनेंगी ।

दोनों स्त्रियाँ : हाँ ! विदेशी वस्त्रों का विसर्जन कर खादी वस्त्र ही पहनने की प्रतिज्ञा कीजिए। (परदे के पीछे से स्त्रियाँ) सुब्बम्मा ! हम प्रतिज्ञा करती हैं कि आज से खादी वस्त्र ही धारण करेंगी। उन गठरियों को लेकर इधर आओ ! विदेशी वस्त्रों की होली जला रहे हैं ! चरखों से सूत, कातेंगे ! सूत्र यज्ञ करेंगे ! आओ मैया आओ !

" **नूलु वड़िके विधमु तेलियण्डी जनुलार**
मीरु नूलु वड़िके विधमु तेलियण्डी !
नूलु वड़िके विधमु कनुगोनि लाभमोंदण्डी !
नूलु वड़िके विधमु तेलियण्डी ! "

(सूत कातने का विधान सीखो लोगों , तुम लोग सूत कातने का विधान सीखो ! सूत कातना सीख कर लोगों लाभान्वित होइये, सूतकातने का तरीका सीखिए ।)

सुब्बम्मा : (गीत सुनकर) ओ पेद्दाड सुब्बम्मा ! ओ सीतम्मा ! सुना वह गीत ? उस फिरंगी ने भी सुना ही होगा । न जाने उसने आन्ध्र की महिलाओं को क्या समझ रखा है । उसकी कुटिलनीति की धज्जियाँ उडाने के लिए हमारी स्त्रियाँ ही काफी हैं । उसकी अंतिम घड़ी आ गई है ।

दोनों स्त्रियाँ : हाँ गोरों की अंतिम घडियाँ आ गई हैं । माताओं ! सब खादी की ही साडियाँ पहनिये । विदेशी वस्त्रों को जलाकर राख कर डालिए ।

सुब्बम्मा : हमारे राष्ट्रीय नेता गाँधीजी का अनुसरण कीजिए । प्रतिज्ञापूरी होने तक बिना विश्राम के काम करते जाइये ।

एक स्त्री : आप सब को खादी साड़ियाँ ही पहननी चाहिए । हमारा खादी आंदोलन सफल होना चाहिए ।

(परदे के पीछे से)

वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

सीटियाँ, लाठियों एवं दौड़ने की आवाजें आ रही हैं । दो पुलिस लाठियाँ जमीन पर ठोकते हुए, सीटी बजाते हुए दौड़ते - हाँफते हुए वहाँ आते हैं ।

पुलिस १ : कहाँ है ? वे गठरीवाली औरतें कहाँ हैं ?

इधर - उधर खोजता रहता है ।

पुलिस २ : (हाँफता हुआ) कहाँ है ? वे तीनों औरते कहाँ है ?

पुलिस १ : कहाँ हैं ? कहीं दिखाई नहीं दे रही हैं ।

पुलिस २ : कहाँ हैं ? कहाँ है वह सुब्बम्मा ? यह तो इन्सान नहीं है । हमारे लिए शैतान सी बन गई है । यहाँ ढूँढते हैं तो वहाँ रहती है। वहाँ ढूँढते हैं तो यहाँ रहती है । उसे ढूँढ निकालना हमारे वश की बात नहीं है । एक ओर अल्लूरि सीतारामराजु ने नाकों चने चबवाये । इधर स्त्रियों की नेता बन सुब्बम्मा हमारी जान खा रही है । बाप रे बाप यह सुब्बम्मा कहाँ से आ धमकी !

पुलिस १ : अब मैं ढूँढ नहीं सकता। सुब्बम्मा को पकड़ना हमसे नहीं होगा। मेरे पैर दुःख रहे हैं। प्यास से हलक़ सूखा जा रहा है।

पुलिस २ : इस आन्ध्र प्रांत में ये औरतें नहीं हैं बाबा ! राक्षस हैं, पिशाच हैं। इन्हें न तो पुलिस का डर है न लाठियों का। बंदूकों का भय नहीं। उइ माँ ! इनको पकड़कर बन्दी बनाना हमसे नहीं होगा। अब एक कदम भी चला नहीं जा सकता। (दोनों जमीन पर बैठ जाते हैं)

सुब्बम्मा : माताओं ! हम उसी ओर आ रही हैं। ये सारी साड़ियाँ आप लोगों को ही खदीदनी है।

दोनों स्त्रियाँ : सारी साड़ियाँ आप ही लोगों को खरीदनी चाहिए। गाँधीजी का आशय सिद्ध करना है।

वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

परदे के पीछे से

स्त्रियाँ : आओ ! मैया सुब्बम्मा आओ ! जल्दी आओ इन साड़ियों पर पुलिस की नज़र पडेगी तो वे इन्हें बिखेर देंगे। जल्दी आओ !

दो स्त्रियाँ : वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

सुब्बम्मा : वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

(तीनों चलने को तैयार होती हैं)

पुलिस १ : वो देखो ! वह सुब्बम्मा है शायद !

पुलिस २ : (उधर देखते हुए) हाँ ! वो देखो ! सुब्बम्मा ! सुब्बम्मा ! पकड़ो ! पकड़ो (उठकर दौड़ता है)

पुलिस १ : देखो ! वही तीन स्त्रियाँ ! पकड़ो ! पकड़ो !

पुलिस २ : (दोनों हाथ फैलाकर उन तीनों औरतों के सामने खड़े हो जाते है)

पुलिस १ : रुको ! रुक जाओ ! हमारी आँखों में धूल-झोंककर भाग जाना चाहती हैं ? आखिर मिल गईं न ? औरतें हैं जाने दो कह कर हमारे साहबों ने छोड़

दिया तो और भड़क रही हैं ? एक कदम भी आगे बढाया तो देख लेना क्या होगा ।

पुलिस २ : तुम लोगों के लिए कितना कष्ट उठाया । कितने गाँव फिराया हमें । कितनी गलियों में भटकते रहे ! हमें चकमा देकर विदेशी वस्त्र जलवाया । खादी का प्रचार कर रही हो ! देखेंगे अब क्या करेंगी देखलेंगे !

पुलिस १ : अबलाएँ मान कर छोड़ देने से आंदोलन खड़ा करने की ठानी ? तुम्हें छोड दें तो आन्ध्र की महिलाएँ बिगड जायेंगी । कदम आगे बढाया तो लाठियों से टांगे तोड़ देंगे !

पहली स्त्री : क्या कहा ! तुम हमारी मैया सुब्बम्मा की टांगें तोड़ दोगे ? फिर कहो ! फिर से कहो वही बात !

दूसरी स्त्री : दोहराओ तो सही ! वही बात फिर से कहो !

पुलिस २ : कहूँगा ! हमें भुलावे में ड़ालकर भाग जाना चाहती हैं ? कदम आगे बढाया तो देख लेना क्या होगा ।

सुब्बम्मा : (गठरी नीचे रखती है) अरे अंग्रेजों के गुलाम ! कौन है रे यहाँ भागनेवाला ! यह मेरा देश है । अपना देश छोड़कर मैं कहाँ जाऊँगी ? जाना तो तुझे होगा ! तुझे ! लो बैठ गई यहाँ ! कर लो जो कुछ करना है। (जमीन पर बैठ जाती है)

पुलिस १ : तुम खादी साड़ियाँ बेचना नहीं छोड़ोगी ? उन्हें बेचना बंद कर दो तो तुम्हें छोड़ देंगे । नहीं तो हथकडियाँ पहना देंगे ।

सुब्बम्मा : बेचना बंद करने को कहनेवाले तुम कौन होते हो ? हमने कडी मेहनत कर चरखों से सूत कातकर ये वस्त्र बुने हैं । ये हमारे परिश्रम के संकेत हैं । जब तक साँस चलती रहेगी, हम खादी साडियाँ बेचना बंद नहीं करेंगी । बुनना बंद नहीं करेंगी । ये खादी साडियाँ पहनना नहीं छोडेंगी । जिसे चाहे बतालो । जो चाहे करलो ।

दोनों स्त्रियाँ : हाथों में बेडियाँ डालो या पैरों में । जो जी में आये करलो ।

(वे दोनों स्त्रियाँ भी सर पर की गठरियाँ उतारकर सुब्बम्मा की बगल में बैठ जाती हैं।)

पुलिस २ : बंद नहीं करोगी खादी साड़ियाँ बेचना ? जानती हो हमारे शासन का धिक्कार करने का परिणाम क्या होगा ?

सुब्बम्मा : जानती हूँ। अच्छी तरह जानती हूँ। लाठियों से बुरी तरह पीटोगे। और कर भी क्या सकते हो तुम ?

पुलिस १ : हमारे कपड़ों को राख की ढेर बनाकर हमारे धंधे को चौपट कर रही हो। औरतों को भड़का रही हो, उकसा रही हो। जानती हो यह शासन - धिक्कार है ?

सुब्बम्मा : जानती हूँ रे ! अच्छी तर जानती हूँ। हमारे देश में तुम्हारा शासन कैसा ? तू क्या समझ रहा है कि तुम्हारे फालतू शासन का धिक्कार किये बगैर हम सर झुकायेंगी ? तुम्हारी यह कुटिलनीति हमारे पास नहीं चलेगी। जब तक तुम इस देश को छोड़कर जाओगो नहीं, तब तक यह नहीं तो कोई और आंदोलन चलता ही रहेगा।

पहली स्त्री : जब तक तुम हमारा देश छोड़कर नहीं जाओगे, हम आंदोलन जारी रखेंगी।

पुलिस २ : बंद नहीं करेंगी ये खादी साडियाँ बेचना ?

दूसरी स्त्री : तुम कौन होते हो जी बंद करने के लिए कहनेवाले ? हम बंद नहीं करेंगी। कभी नहीं। जो चाहो करलो।

सुब्बम्मा : अपनी जिद छोड़कर हमारे देश से भाग जाओ।

पुलिस १ : शासन धिक्कार के लिए १०० रु. जुर्माना भरना पड़ेगा।

सुब्बम्मा (आहा हा हा हा हँसती हुयी) मैने भला कौनसा जुर्म किया है ? हमारे खादी प्रचार में बाधा डालकर गलती तुमने की है। इसलिए जुर्माना तुम्हें भरना है, मुझे नहीं।

पुलिस २ : शासन-धिक्कार कर सड़कों पर साड़ियाँ तुम बेच रही हो। १०० रु. का जुर्माना भरना ही पड़ेगा। नहीं तो टांगें तोड़ देंगे।

सुब्बम्मा : (उठकर खड़ी हो जाती है) मेरी टांगें तोड़ोगे ? तुम्हारे हाथ-पैर बेकार हो जाएँ) तुम्हारी बोलती बंद हो जाए। हमारे देश में भीख माँगनेवाले भिखारी। तेरी लाठी की मार से घबरानेवाली नहीं हूँ रे मैं ! साहसी वीरनारी हूँ मैं ! जो करना हो करलो !

दोनों स्त्रियाँ : (उठ खडी होती है) हाँ रे हाँ। जो करना हो करले।

पुलिस २ : जुर्माना नहीं भरने से तुम्हें जेल में बंद कर देंगे।

सुब्बम्मा : मैं जुर्माना नहीं भरूँगी। जुर्माना भरने के लिए मेरे पास रखा ही क्या है ? इस मुण्डी के सिवा !

(सर पर से आँचल हटाती हुयी पुलिस के ऊपर ऊपर जाती है। पुलिस अचम्भे में आकर पीछे हटता है।)

पुलिस १ : तब तुम्हें जेल में बंद करने के सिवा दूसरा चारा नहीं। चलो राजमेण्ड्री सेंट्रल जेल में। वहाँ सब पता चलेगा।

सुब्बम्मा : क्या पता चलेगा ? जेल में मैं चखाऊँगी मजा सबको ! पुलिस की ओर बढ़ती है।

महाभारत के अंतर्गत, विराट पर्व में बृहन्नला के रूप में उत्तर का सारथी बन रथ हांकने वाले अर्जुन की याद में कुरु वीरों द्वारा कहे गये उत्तेजक छन्द को सुनाती हुई कहती है , वह कुंती सुत मध्यम अर्जुन कोई और नहीं मैं ही हूँ और कौरव सेना तुम्हीं हो। तुम मेरा मुँह बंद नहीं कर सकोगे। मैं अपने कविता-पाठ से, भाषणों से जेल में उथल-पुथल मचा दूँगी। यह तुमसे सहा नहीं जाएगा। उस वक्त मुझे देख पसीने से तर-बतर तुम्हारे शरीर थर-थर काँपने लगेंगे। हलक सूख जायगा। जानते हो तब तुम लोग क्या करेंगे ? दिनातिदीन हो विलाप करेंगे।

पुलिस १ : अभी भी मौका हाथ से निकल नहीं गया है। कहदो कि खादी का प्रचार नहीं करोगी। हमारी शरण लो, तुम्हें छोड़ देंगे।

सुब्बम्मा : माँ ! ओ भारतमाता ! मैं इस खादी की गठरी को साक्षी मानकर प्रतिज्ञा करती हूँ कि जब तक सांस चलती रहेगी, तब तक खादी का प्रचार करती रहूँगी। मैं तुमसे नहीं ईश्वर से शरण माँगूँगी। मेरी रक्षा करने के लिएं या सजा देने के लिए ऊपरवाला है - तुम कौन होते हो मुझे सजा देनेवाले ?

पुलिस २ : बस करो तुम्हारा भाषण। चलो चलो।

सुब्बम्मा : चलूँगी। चलूँगी। मुझे बंदी बनाने से क्या फायदा ? हजारों लाखों की संख्या में हमारे भारतवासी निकल पडेंगे। हमारे अहिंसामूर्तियों को तुम जो कष्ट पहुँचा रहे हो, उनके मुँहसे निकलने वाले शाप तुम्हे तीर की तरह चुभेंगे। हमारी आहों का फल तुम्हें भुगतना ही पड़ेगा।

(परदे के पीछे)

वंदेमातरम् - वंदेमातरम् - वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

सुब्बम्मा : सुन रहे हो वह शंखनाद ! उसी से तुम्हारे कान के परदे फट जायेंगे। आँखे बंद हो जायेंगी। पैर शिथिल हो जायेंगे। अब वह दिन दूर नहीं जब तुम सब हमारा देश छोड़कर भाग जायेंगे।

पुलिस १ : चलो ! चलो !

आगे, पीछे पुलिस बीच में तीनों स्त्रियाँ, निकल पड़ते हैं। उनके पीछे कुछ और स्त्रियाँ आकर गठरियाँ उठा लेती हैं।

स्त्रियाँ : वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

(हाथ ऊपर उठाकर जोर से आवाज देती हैं)

देशबान्धवी

नाटक - अंक २

माकोद्दी तेल्लुदोरतनमु

राजमहेन्द्रवरम बालिका अनातन पाठशाला के आगे

(परदे के पीछे से)

माकोद्दी तेल्लुदोरतनमु देव
माकोद्दी तेल्लुदोरतनमु !
मा प्राणालपै पोंचि - मानालु हरियिंचे ॥ 'माकोद्दी ॥
पन्नेण्डु देशालु - पण्डुचुन्नागानि - पट्टेडन्नमे लोपमंडी !
उप्पु ! मुट्टकुंटे दोषमंडी !
नोट ! मट्टीकोट्टि पोताडंडी !
अय्यो ! कुक्कलतो पोराडि-कूडु तिंटामंडी'' माकोद्दी ॥
वर्तकम्बुन कोच्चि- पट्टणम्बुलुपट्टि - राज्यामोकटि अल्लिनाडु !
दान्नि ! राणीकप्पगिंचिनाडु !
ई चित्रामिदेमन्न - शिक्षिस्तानंटाडु ॥ माकोद्दी ॥
वंदेमातरम् - वंदेमातरम्
सुनाई दे रहे हैं।

(नहीं चाहिए हमें इन गोरों का शासन, नहीं चाहिए। हमारे प्राणघातक, इज्जत लूटनेवाले इन गोरों का शासन हमें नहीं चाहिए। बारहों देशों में फसलें उग रही हैं लेकिन हम मुट्ठी-भर दानों के लिए तरस रहे हैं। नमक को हाथ लगाना भी अपराध समझा जा रहा है, हमें सरासर धोखा दिया जा रहा है। हायरे हाय ! कुत्तों से लड़कर कभी रोटी खायी जायगी ? ब्यौपार के नामपर इस धरती पर कदम रखकर, शहरों पर कब्जा जमाकर, इसने एक राज्य की स्थापना की और उसे रानी के सिपुर्द किया। पूछने पर कि यह कैसा अन्याय है ! सजा देने की धमकी देता है। हमें नहीं चाहिए इन गोरों का शासन।)

पेद्दाड़ सुब्बम्मा, चल्लपल्लि सीतम्मा खादी साड़ियाँ पहनी हैं। दोनों गीत सुन रही हैं। उनके हाथों में खादी सूत से बनी मालाएँ हैं।

सीतम्मा : पेद्दाड सुब्बम्मा ! सुना तुमने ? यह आवाज हमारी दुव्वूरि सुब्बम्मा की ही है। हमारी मैया आ गई है। साल भर की जेल की सजा काट कर माई लौट आई है।

पे. सुब्बम्मा : हाँ सीतम्मा ! यह आवाज अपनी माई की ही है। राजमहेन्द्रवरम की जेल में सजा पूरी कर आ रही हैं।

(परदे के पीछे से) वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

दुव्वूरि सुब्बम्मा का प्रवेश

च. सीतम्मा, पे. सुब्बम्मा : वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करती हैं

दु. सुब्बम्मा : वंदेमातरम् ! (हाथ जोड़ती है।)

च. सीतम्मा : आ गईं माई ! तुम्हारे न रहने से हम अनाथवत जी रही हैं।

पे. सुब्बम्मा : मैया ! सुब्बम्मा ! तुम्हारी अनुपस्थिति में हम जिन्दा लाश बन गई हैं। तुम्हारे साथ जेल में नहीं रहने दिया। हमें तो ढकेल दिया गया।

(दोनों सुब्बम्मा के पैरों पर गिर पड़ती हैं)

सुब्बम्मा : उठो ! उठो ! तुम लोगों ने अपने कर्तव्य का पालन किया है। तुम लोगों के जेल से बाहर रहने से ही तो समय-समय पर देश की परिस्थितियों का पता चलता रहा। इतना ही नहीं तुमने खादी का प्रचार भी सफलता पूर्वक किया है। सनातन पाठशाला को राष्ट्रीय पाठशाला के रूप में उबारा, इससे बढ़कर और क्या कर सकती हैं तुम दोनों ?

(वे दोनों उठकर खड़ी हो जाती हैं)

पे. सुब्बम्मा : माई ! तुम साधारण स्त्री नहीं हो ! आन्ध्र प्रांत में जेल जानेवाली प्रथम महिला हो तुम। पति को खोकर घोर विपदा में पड़ी हुई हो। फिर भी अपनी वेदना को हृदय में छिपाकर, आँसुओं के घूँट पीकर, अपने आपको राष्ट्रीय आंदोलन में समर्पित कर दिया।

च. सीतम्मा : हाँ माई ! तुम्हारा धैर्य एवं साहस सराहनीय हैं।

दु. सुब्बम्मा : अरे वाह तारीफों के पुल बाँधे जा रहीं हैं। बस भी करो। भूलना मत अपने कर्तव्य को !

(जनता के बीच से आवाजें सुनाई देती हैं - दुव्वूरि सुब्बम्मा को बोलना है, गाना है।)

दु. सुब्बम्मा : इस दुव्वूरि सुब्बम्मा ने गाने के लिए ही जनम लिया है। और यह सुब्बम्मा जी रही है, लोगों को अच्छी बाते बताने के लिए भारतमाता की सेवा के लिए भगवान ने दिये हैं ये वरदान् मुझे ! (बहते आँसुओं को आँचल से पोंछती है)

फिर से भीड़ में से आवाज आती है, माई ! ओ माई सुब्बम्मा ! आ गई ! तुम्हारी आवाज सुनकर पूरा साल भर बीत गया। इस तेलुगु प्रांत की सीमाओं को झकझोरते हुए अपनी कोयल की सी मीठी आवाज में गाओ। फिरंगियों के दिल की धड़कने बंद होने तक गाती जाओ। इन गोरों की काली करतूतें बंद होने तक गाती जाओ।

च. सीतम्मा : हाँ मैया ! गूँजने दो, तुम्हारी आवाज चहुँ ओर। ताकि तेलुगु भाषियों के हृदय पल्लुवित हो जाएँ। पराये शासकों की बोलती बंद हो जाय।

वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

भीड में से वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

दु. सुब्बम्मा : "माकोद्दी तेल्लदोरतनमु", गीत पूरा अभिनय के साथ गाती रहती है। इतने में दो पुलिस ढफली बजाते हुए प्रवेश करते हैं।

(आवाज बुलंद करके फिर से गाती है)

सुब्बम्मा : (गुस्से से) अरे ओ पुलिसवाले ! क्या समझ रखा है मुझे ? जानते हो ! मैं, मैं विधवा हूँ। मैं चाहूँ तो तुम्हें तथा अन्य पुलिसवालों को एक साथ गंगा में डुबो सकती हूँ। लेकिन राष्ट्रीय नेता गाँधीजी के आदेशानुसार अहिंसाव्रत की दीक्षा ले रक्खी है। इसीलिए तुम्हें यूँ ही छोड़ रही हूँ। अपनी ढफलियों के साथ फौरन यहाँ से दफा हो जाओ। खबरदार जो इधर फिर कदम रखा ! (ढफली बजाना बंद करते हैं)

च. सीतम्मा और पे. सुब्बम्मा बाल पकड़कर गोदावरी में डुबो देने की धमकी देती हैं।

दु. सुब्बम्मा : आन्ध्र की महिलाओं! धैर्य और साहस ही मनुष्य के कवच- कुण्डल हैं। मुझे इस राजमहेन्द्रवरम की जेल में कैद किया गया। इससे मेरा क्या बिगडा ? पूरे साल भर मैंने जेल के अधिकारियों के नाक में दम कर रखा था। वे सह न सके। माई! सुब्बम्मा! इस जेल में रहकर हमारी जान न लो! निकल जाओ बाहर। कहकर रिहा कर दिया। अगर हम डर जायेंगे तो विदेशी शासकों के गुलाम नकेल डालकर हमें नचायेंगे। उसी की नाक में हमें नकेल डालना चाहिए ताकि उसका दम घुटने लगे। जालियनवाला बाग के हिंसाकांड के बारे में सोचने भर से कलेजा मँह को आ रहा है। इसे यूही छोड़ना नहीं चाहिए।

सीतम्मा, सुब्बम्मा : महिलाओं! कदम बढाओं! फिरंगी के अस्तित्व को मिट्टी में मिलाना है।

(परदे के पीछे से)

ओ मैया सुब्बम्मा! बालिका सनातन पाठशाला के समारोह में तुम्हें भाग लेना है।

सुब्बम्मा : सीतम्मा! सुब्बम्मा! चलो पाठशाला जायेंगे।

देशबान्धवी

नाटक - दूसरा अंक

माकोद्दी तेल्लदोरतनमु

दूसरा दृश्य

राजमहेन्द्रवरम् बालिका सनातन पाठशाला

दुव्वूरि सुब्बम्मा चटाई पर बैठी रहती है। सामने एक ओर स्त्रियाँ दूसरी ओर बालिकाएँ बैठी रहती हैं। सुब्बम्माजी के हाथ में **विद्या विहीन : पशु** ....

सुब्बम्मा : बड़ों का कहना है, 'विद्या विहीनस्य पशुः।' अर्थात अनपढ मनूष्य पशु के समान है। वैदिक काल में गार्गी, मैत्रेयी जैसी विदुषियाँ विद्यमान थीं।

पौराणिक युग में शकुंतला, द्रौपदी, दमयंती जैसी स्त्रियाँ बहुत अक्लमंद मानी गयीं। आज के युग में काकतीय रुद्रमदेवी, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगनाएँ भारत के लिए आदर्श बन गई हैं।

पहली स्त्री : मैया ! दुष्यंत की सभा में आई हुई शकुंतला कितने ही शास्त्रों का उल्लेख करती है। उसने अध्ययन कब किया था ?

सुब्बम्मा : शकुंतला, कण्व महर्षि के आश्रम में केवल विदुषी ही नहीं बनी बल्कि महान् ज्ञान भी प्राप्त किया था। समूची स्त्री जाती को पढ़ा-लिखा होना चाहिए। विशेष ज्ञानार्जन भी करना है। केवल घरेलू मामले ही नहीं अपितु अपने चारों ओर घटित होनेवाली घटनाओं की जानकारी भी उनके लिए आवश्यक है। विश्व की गति-विधियों का भी अवगाहन होना चाहिए। अतः सबसे पहले पढ़ना-लिखना सीखना है।

दूसरी स्त्री : ये देखो ! स्लेट और पेन्सिल लाये हैं। हम भी पढेंगी।

सुब्बम्मा : हाँ ! आप सब लोगों को पढ़-लिख कर ज्ञानवान बनना है। जानती हो विवेकानन्द ने क्या कहा था ? जब स्त्रियाँ पढ़ लिख कर ज्ञानवान बनती हैं तब वे अपने जीवन को स्वयं सुधार सकती हैं। मालूम है तुम लोगों को कि महात्मा गांधीजी ने क्या कहा था ? स्त्री पढ़ी-लिखी होगी तो उस परिवार के सभी सदस्य विद्यावान् हो जायेंगे।

एक बालिका : हम सब पढ़ेंगी। काव्यों एवं शास्त्रों का अध्ययन करेंगी। विश्व के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगी।

पहली स्त्री : माई ! राष्ट्र के नेता गाँधीजी इस समय कहाँ हैं ? एक बार उनके दर्शन करने की इच्छा है।

सुब्बम्मा : पगली ! मैं कैसे बता सकती हूँ कि वे कहाँ हैं ? प्रह्लाद का, हरि के अस्तित्व से सम्बंधित छन्द सुनाती है।

दूसरी स्त्री : याने कि आपका कथन है कि गाँधीजी भगवान् का अवतार हैं !

सुब्बम्मा : भगवान् आखिर है कौन ? विपत्तियों में पडे मनुष्यों की रक्षा करने का प्रयास, जो करता है, वही भगवान है। राष्ट्र का नेता बन भारतमाता की दास्य श्रृंखलाओं को तोड़ फेकने के लिए अवतरित हुआ है गाँधी। तिलक, गोखले, मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू, पुरुषोत्तमदास टंडन, लाला लजपतराय, अबुल कलाम आजाद जैसे अनेकों नेताओं ने गाँधीजी का अनुसरण किया। चालीस करोड़ दिलों पर छानेवाला, एक लंगोटीवाला कोई साधारण व्यक्ति नहीं है। अगुआ बनकर पूरे भारत को अपने साथ ले जाने वाला महान् नेता है गाँधी। अंग्रेजों के छक्के छुड़ानेवाला एक महापुरुष है गाँधी।

पहली स्त्री : अर्थात् उन अंग्रेजों के चंगुल से भारत को मुक्त करने के लिए उन्होंने जन्म लिया ?

सुब्बम्मा : उन्होंने क्यों जन्म लिया ? कैसे जन्म लिया ? क्या अवतारी पुरुष है या नहीं ! सोचने लायक बातें ये नहीं हैं। सोचना है कि उन्होंने इस देश के लिये क्या किया ? अगर मार्ग अच्छा है तो सबको उस राह पर चलना है। राजा राम मोहन राय ने बंगाल में सती प्रथा का विरोध कर स्त्री जनोद्धार का प्रयास किया। विवेकानंद ने सारे विश्व में भारतीय धर्मपरक सिद्धांतों का प्रचार किया। आज वीरेशलिंगम पंतुलु स्त्रियों के उद्धार का प्रयास कर रहे हैं। गाँधीजी फिरंगियों के पंजे से भारत की रक्षा का प्रयत्न कर रहे हैं। स्त्री शिक्षा एवं स्त्री जनोद्धार उन्हीं के कुछ आशय हैं।

स्त्रियाँ
बालिकाएँ : गाँधीजी का आशय पूरा करेंगे। दीक्षाबद्ध हो हम सब तुम्हारे साथ चलेंगे। महाभारत तथा श्रीमद्भागवत के छन्द पढ़कर तुम्हीं को समझाना होगा। हम उस माधुर्य का आस्वादन करेंगी।

सुब्बम्मा : कल से आरंभ करेंगे।

(परदे के पीछे से)

लाठियों की आवाजें, सीटियों एवं लोगों के भागने की आहट पुलिस का प्रवेश

पुलिस १ : कहाँ है वह सुब्बम्मा ? कहाँ है वह ?

पुलिस २ : वो सुब्बम्मा कहाँ है, बतायेंगी या नहीं ?

पहली स्त्री : हम नहीं बतायेंगी।

पुलिस २ : वो सुब्बम्मा कहाँ है बताओगी या नहीं !

पहली स्त्री : हम नहीं बत्तायेंगी !

दूसरी स्त्री : हम नहीं बतायेंगी ?

पुलिस १ : जानती हो, न बताने पर क्या किया जायेगा ?

पहली स्त्री : क्या कर लोगे भला ? बंदी बनाकर जेलखाने में डाल दोगे, यही न ?

सुब्बम्मा : यहीं हूँ रे मैं !

पुलिस २ : अभी अभी तो जेल से छूटी हो ! फिर से शुरू कर दिया ?

सुब्बम्मा : हाँ ! हाँ ! शुरू कर दिया है। अरे ओ अंग्रेजों के गुलाम आओ ! आओ ! इस बार अगर साहस नाम की कोई चीज हो तो पकड़ो मुझे।

आगे ही आगे बढ़ती है

पुलिस १ : हम कौन हैं यह जानते हुए ही बात कर रही हो ?

सुब्बम्मा : हाँ हाँ भली भाँति जानती हूँ। अंग्रेजों के तलुवे सहलाते हुए उनके पैरों की धोवन अपने माथे पर छिड़कने वाले गुलाम हो। भारतीय बंधुओं की जान लेनेवाले देशद्रोही हो। भारत माता की कोख से जन्मे नीच हो।

पुलिस २ : हमें गुलाम कह रही हो ? नीच कह रही हो ? पहले यह बताओ कि तुम यहाँ क्या कर रही हो ?

सुब्बम्मा : अरे ओ मूर्ख और क्या करेंगे ? यह पवित्र विद्यालय है। सरस्वती सदन। क्या तुम इतना भी नहीं जानते ? यहाँ षडयंत्र नहीं रचे जाते। हत्याएँ नहीं होतीं। हमारी निरक्षरास्य महिलाओं को विद्यादान कर रही हैं। विशेष ज्ञान की जानकारी दे रही हैं। हमारी जन्म भूमि में तुम्हारे विदेशी शासको की बुरी हरकतों का ब्योरा दे रही हैं।

पुलिस १ : इन्हें वही तो न बताने को कह रहे हैं। तुम तो खैर पूरी तरह बिगड़ चुकी हो। इन्हें मत बिगाड़ो।

सुब्बम्मा : बिगाड़ेंगे या बनायेंगे। इससे तुम्हें क्या लेना-देना। भागो यहाँ से, अपना रास्ता नापो। हमारे देश में, हमपर तुम्हारा शासन कैसा ?

(परदे के पीछे से)

वंदेमातरम् - वंदेमातरम् - वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

सुन रहे हो ? सुन रहे हो ये नारे ! एक दिन ये नारे ही बाढ बनकर तुम सब लोगों को अपने साथ बहा ले जायेंगे। अब वह समय दूर नहीं है। पकड़ो मुझे। अब पकड़ो मुझे। बनाओ बंदी।

(दोनो पुलिस पीछे हटते हैं)

सुब्बम्मा : डरपोक कहीं के ! भागे जा रहे हैं। आओ आओ पकड़ो ! कायर कहीं के, भाग गये।

सभी स्त्रियाँ : वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

स्त्रियाँ, बालिकाएँ : गाँधीजी का आशय पूरा करेंगे। दीक्षाबद्ध हो हम सब तुम्हारे साथ चलेंगे। वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

समाप्त

देशबान्धवी

नाटक - दूसरा अंक

माकोद्दी तेल्लदोरतनमु

तीसरा दृश्य

पेद्दापुरम

दुव्वूरि सुब्बम्मा, सीतम्मा एवं पेद्दाड सुब्बम्मा मंच पर प्रविष्ट होती है। तीनों हाँफती रहती हैं।

सीतम्मा : किसी तरह उन पुलिसवालों की आँखों में धूल झोंककर पेद्दापुरम पहुँच गये। न जाने यह वनभोजन क्या है ?

पे. सुब्बम्मा : वनभोजन नहीं। कुछ भी नहीं। कहा गया है कि यह लुकछिपकर आयोजित की गई राजनैतिक सभा है।

सुब्बम्मा : पे. सुब्बम्मा ! तुमको कितनी बार समझाया है कि रहस्यमयी बातें कभी खुलकर बोली नहीं जातीं।

सीतम्मा : सम्हल जाओ। दीवारों के भी कान होते हैं।

(दूसरी ओर पुलिस पेद्दाड कामेश्वरम्मा को खूब पीटते रहते हैं।)

सुब्बम्मा : (ध्यान से देखती है) सीतम्मा ! उधर देखो, उधर देखो !

पुलिस किसी को पीट रही है।

सुब्बम्मा : चलो - चलो

(तीनों नजदीक जाती हैं। दो मर्दों को, जो बुरी तरह घायल हैं, बचाने के लिए पेद्दाड कामेश्वरम्मा, खड़ी है। अतः पुलिस उसे मार रहे हैं।)

पुलिस १ : हमें चकमा देकर वनभोजन के बहाने लोगों को बुला कर यहाँ सभा का आयोजन करोगी ? क्या हम समझ नहीं सकते ?

वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

पुलिस २ : हमारे पास तुम्हारी दाल नहीं गलेगी ! हम यूँ ही समझ सकते हैं।

सुब्बम्मा : अरे ओ निर्दयी पुलिसवालों। बेचारी लड़की को इस तर पीटा। जरा भी झिझक नहीं ? तुम्हारी लाठियाँ टूट क्यों नहीं गयीं ? तुम्हारे हाथ टूट जाते तो कितना अच्छा होता। बच्ची को मार डालोगे क्या ? अगर तुममें साहस हो तो मुझे मारो !

(मार खाती कामेश्वरम्मा के सामने हाथ फैलाये खड़ी हो जाती है। पुलिस मारना छोड़कर पीछे हटती है)

कामेश्वरम्मा : सही वक्त पर आकर तुमने मुझे बचा लिया। वरना ये लोग मेरी जान ले लेते।

सीतम्मा : इस सुब्बम्मा को तू ने क्या समझ रखा है ? उस महाकाली का अवतार है।

कामेश्वरम्मा : सीतम्मा तुमने ठीक कहा।

सुब्बम्मा : बेचारी औरत को इस कदर पीट रहे थे, चुपचाप देखते कैसे बैठ गये ? कायरों उठो ! पुलिस ने पीटना बंद कर दिया। कम से कम अब तो उठो !

(कामेश्वरम्मा को एक ओर हटाकर उन मर्दों को उठाने की कोशिश करती है। दोनों पुरुष कराहते रहते है।)

कामेश्वरम्मा : (हाँफती कराहती हुई) वे दोनो उठ नहीं सकते भैया। वे डॉ. गोपालकृष्णयाजी हैं। पुलिसवालों की लाठियों की चोट से उनका हाथ टूट गया है। वे स्वामिनायुडूजी हैं। लाठियों की चोट से उनका पैर टूट गया। उन दोनों को पुलिसवाले मार रहे थे। बचाने के लिऐ बीच में मैं गई तो मुझे भी खूब मारा।

सुब्बम्मा : हाय ! हाय ! ये क्या हो गया ! आपका वनभोजन इस तरह सम्पन्न हुआ। गोपालकृष्णय्याजी आपका हाथ कैसा है ? स्वामिनायूडूजी ! आपका पैर कैसा है ? सूजन बढ़ न जाए, इहके पहले ही पट्टी बँधवानी है।

(सुब्बम्मा, सीतम्मा, पे सुब्बम्मा, तीनों मिलकर उन दोनों को ठीक तरह बिठाती है।)

कामेश्वरम्मा : ऐन मौके पर आप नहीं आतीं तो न जाने इन पुलिसवालों के हाथ मेरी क्या दशा हुई होती ! वे अभी यहीं हैं ! मालूम नहीं और क्या करेंगे !

सुब्बम्मा : क्या करेंगे ? मै उनकी खबर लूँगी। वो पुलिसवालों अब भी खडे क्यों हो ? चले क्यों नहीं जाते ? तो ठीक है। कोसो अपनी तकदीर को - सुनो

'माकोद्दी तेल्लुदोरतनमु' अभिनय के साथ गाने लगती है। अरे ओ गुलाम गोरों के ! बजाओ अपनी ढफली। तुम ढफली बजा नहीं सकते क्यों कि वो तो तुम्हारे पास है नहीं ! अच्छी बात है, तुम लोग जाओ और अपने साहबों से कहो कि मुझे कैद करें। ये बताने के लिए भागो रे ! (सचमुच पुलिस भाग जाते हैं) सब मिलकर गाने लगते हैं - माकोद्दी तेल्लुदोरतनमु

देशबान्धवी

नाटक - तीसरा अंक

नमक लो भाई नमक

चोल्लंगि - काकिनाड़ा - समुद्र का किनारा

(परदे के पीछें से गीत सुनाई दे रहा है)

"जगद्रक्षकुडु गाँधी महात्मुडु जनुलंदरु मीरेरुगंडी !
जगतिनि धर्ममु स्थापन सेयग जन्मिंचिन हरि इतडंडी !
भारत देसमुनुद्धरिंचुटकु भारतीयुडै जन्मिंचेन
भारत सोदरुलारा मीरिदि डेंदमुलोपल तलचंडी ! "

(हे भारतवासियों जगद्रक्षक हैं महात्मागान्धी ! इन्हें पहचानो ! ये इस जग में धर्म की स्थापना करने के लिए जन्म लेने वाले हरि ही हैं। भारतदेश के उद्धार के लिए भारतीय बनकर इन्होंने जन्म लिया। ऐ भारतवासी भाइयों ! इसे अच्छी तरह समझने का प्रयास कीजिए।)

दुब्बूरि सुब्बम्मा के साथ सीतम्मा, पेद्दाड सुब्बम्मा का प्रवेश।

सुब्बम्माजी खादी साडी पहने, सर पर आँचल डाले, कंधे पर झोली लटकाए हाथ में लाठी थामें रहती हैं। सीतम्मा तथा पे. सुब्बम्मा खादी की साडियाँ पहने बगल में छोटी गठरियाँ थामें रहती हैं।

सुब्बम्मा : महिलाओं ! इस बुद्धिहीन गोरे ने खारे पानी पर कर लगाया हैं, मानो इसने यह पानी अपने देश से लाया हो। हो सकता है कल यह उस हवा पर भी कर लगाये जिससे हम साँस लेते है। यह भूमि जब बनी उसी समय यह खारे पानी के समुद्र भी साथ थे। इस नमक पर का कर ठुकराने के लिए गाँधीजी दण्डी यात्रा पर जा रहे हैं।

सीतम्मा : गमछा पहने गाँधीजीको देखकर ये फिरंगी थर-थर काँप रहे हैं। आइये ! महिलाएँ चली आइये ! नमक सत्याग्रह में भाग लेने के लिए चली आइये। गाँधीजी का आशय पूरा कीजिए।

सुब्बम्मा : बोरिया - बिस्तर बाँधकर अंग्रेजों के भागने का दिन अब दूर नहीं है। सत्याग्रह जारी रखिए।

(वेदांतम कमलादेवी का प्रवेश)

सुब्बम्मा : वंदेमातरम् (हाथ जोड़ती हैं)

कमलादेवी: वंदेमातरम् (हाथ जोडती है) मैया ! अपनी ये सुब्बम्मा बुलुसु सुभद्रम्मा, पारपूडि वेकंटरमणम्मा, मानाप्रगड सुन्दरम्मा, सब रवाना हुई हैं। बस आती ही होंगी।

४ स्त्रियाँ : वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

सुब्बम्मा : हमारे चलने का समय आ गया है। नजदीक के रास्ते से हम समुद्र के किनारे पहुँचेंगी। पुलिस के पहुँचने के पहले ही हम नमक तैयार करेंगी। नमक लो माई नमक कहते हुए सबमें बाँटना है।

कमलादेवी : पुलिस के पहुँचने के पहले ही हम नमक तैयार करेंगी !

सुब्बम्मा : पुलिस लाठियों से बुरी तर पीटे ! खून की धार बह चले ! खारा पानी उंडेल कर परेशान कर दें तो भी सत्याग्रह जारी रखने की प्रतिज्ञा कीजिए।

पे. कामेश्वरम्मा : चाहे जिस किसी का सामना करना पडे, कितनी ही अड़चने पैदा हों, हम प्रतिज्ञा करती हैं कि सत्याग्रह रोकेंगी नहीं। हम शपथ लेती हैं कि भारतमाता की गुलामी की जंजीरों को तोड़ फेकने के लिए अपनी जान की बाजी लगा देंगी।

(एक दूसरे के हाथ पर हाथ रखती हैं)

सीतम्मा : माई ! देर हो रही है। चलो चलो।

सीतम्मा, सब : वंदे मातरम् - वंदेमातरम्

सुब्बम्मा : वंदेमातरम् - वंदेमातरम् (सुब्बम्मा कदम बढ़ाती है। उसके पीछे सब चलने लगती है)

(पीछे से गीत सुनाई दे रहा है)

नमक सत्याग्रह - दण्डी सत्याग्रह

आओ आओ कदम बढ़ाओ

नमक सत्याग्रह - दण्डी सत्याग्रह

आओ आओ कदम बढ़ाओ ।

इतने में लाठियों तथा सीटियों की आवाजें आती हैं। हाथ में लाठी लिए दो पुलिस का प्रवेश

पुलिस १ : रुको ! रुक जाओ वहीं। कदम आगे बढाया तो टांगे तोड़ देंगे। आई बात समझ में ? (लाठी उठाता है)

सुब्बम्मा : क्यों रे मारेगा ! मार ! और कर ही क्या सकता है तू ! तुम्हारी लाठिंयाँ भले ही टूट जाएँ हमारा आंदोलन रोक नही सकतीं। हम सब निकल पड़ी हैं, तुमसे ड़रकर पीठ दिखाने के लिए नहीं। लाठियाँ झुका दो और हट जाओ एक ओर। हटते हो या नहीं (बुलंद आवाज में कहती है)

पुलिस २ : हटना तुम्हे है हमें नहीं। १४४ सेक्शन अमल में है। कदम आगे बढायेंगी तो लाठियों से काम लेना होगा।

सुब्बम्मा : लाठियों से काम लोगे या बंदूकों से, जो चाहे करलो। (महिलाओं की ओर घूमकर) माताओं ! इस अशाश्वत शरीर के लिए घबराइये मत। भारतमाता को मुक्त करने के लिए जान की बाजी लगाकर आगे ही आगे बढते जाइये । वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

बाकी स्त्रियाँ : वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

सब आगे बढती है

पुलिस १ : मारो ! मारो !

दोनों मिलकर सुब्बमाजी को तथा अन्य महिलाओं को बुरी तरह पीटने लगते हैं।

सुब्बम्मा एवं अन्य स्त्रियाँ : वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

पुलिसवाले मारते रहते हैं। स्त्रियाँ जमीन पर लुढक जाती हैं।

पुलिस १ : अब ये उठ नहीं सकतीं। समझ लो कि इनका नमक सत्याग्रह समन्दर में मिल गया।

पुलिस २ : नमक सत्याग्रह उन्हीं के साथ मिट्टी में मिल गया। अब चलो, चलते हैं।

सुब्बम्मा : इनकी लाठियाँ हमारे शरीर को छलनी बना सकती हैं, आंदोलन को नहीं। दण्डी यात्रा के बारे में सोचते हुए उठिये। कदम आगे बढाइये।

वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

कहती हुई आगे बढ़ती है

लाठियों, सीटियों और दौड़ने की आवाज आती है। सीटी बजाते हुए, लाठी से जमीन पर ठोकते हुए

पुलिस १ : वहीं रुक जाओ ! निकलीं फिर से ? हमारी लाठियाँ टूट गई। फिर भी लगता हैं आप लोगों को चोट नहीं आई। रुक जाओ, वहीं रुक जाओ।

पुलिस २ : रुक जाओ क़दम आगे न बढाना।

पुलिसवालों के सामने आकर रुकती हैं।

सुब्बम्मा : अधिक मात्रा में नमक तैयार करो।

अन्य स्त्रियाँ : दण्डी सत्याग्रह में आओ आओ चली आओ महिलाओं चली आओ

अहिंसाव्रती होकर कार्यदीक्षानिरत होकर चली आओ महिलाओं चली आओ ! वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

पुलिस १ : जाने दो बेचारी स्त्रियाँ हैं समझकर दया दिखा रहे है ! बाप रे बाप ये तो और भड़क रही हैं। अब इन्हें छोड़ा नहीं जा सकता। (लाठी उठाता है)

सुब्बम्मा : अरे ! अरे वो पुलिस के बच्चे ! अंग्रेजों के गुलाम ! तुम हमारा क्या बिगाड़ सकते हो ? पहले लाठी नीचे करो और यहाँ से भाग निकलो। वरना जानते हो मैं क्या करूँगी ? सागर में डुबो दूँगी। (पुलिस की ओर बढ़ती है।)

पुलिस पीछे हटता है।
(कमलादेवी की कानों में कुछ कहती है)
(कमलादेवी अन्य स्त्रियों के कान में कुछ कहती हैं)
पुलिसवाले पीछे हटते हैं।

सुब्बम्मा : वंदेमातरम् - वंदेमातरम् पीछे जाने का अभिनय करती हुई फिर से
अन्य स्त्रियाँ : लौट आती हैं।

पुलिस १ : ये शैतान लौट रही हैं।

पुलिस २ : इन औरतों पर भरोसा नहीं किया जा सकता। किस ओर से आ धमकती हैं पता ही नहीं चलता। अब पुलिसवालों से किसी को डर नहीं रहा।

पुलिस १ : उस सुब्बम्मा को देखते ही डर तो लगता ही है न जाने क्यों शरीर थर-थर काँपने लगता हैं। वह बात करती है तो लगता है मानो बादल गरज रहे हैं। उन बातों को सुनते ही कानों के परदे फट जाते है। आँखो के सामने अंधेरा छा जाता है।

पुलिस २ : उसके हाथ की छडी देखते ही बदन काँपने लगता हैं। मुझे तो वह यमदण्ड सा दिखाई देता है। न जाने ये सब क्या है ? (परदे के पीछे से) वंदेमातरम् - वंद्रेमातरम् कमलादेवी इधर आओ। सीतम्मा सब मिलकर बडे भांडे निकालो। उनमें समुद्र का जल भरो। आओ आओ नमक तैयार करो। सबमें बाँटो। आओ आओ वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

पुलिस १ : सुन रहे हो वह शोरगुल ?

पुलिस २ : हाँ सुन रहा हूँ ! सुन रहा हूँ। यह सुब्बम्मा साधारण स्त्री नहीं है। हमें चकमा देकर भाग गई। वहाँ नमक तैयार करवा रही है।

(परदे के पीछे से पुलिस के आने की आवाजे आती है)

सुब्बम्मा : कमलादेवी - कामेश्वरम्मा - सीतम्मा, तैयार नमक के भाँडे लाओ ! सबमें बाँटो। नमक लो माई नमक ! (इधर से सुब्बम्मा अन्य स्त्रियों के साथ प्रवेश करती है। सबके सर पर नमक से भरे भाँडे रहते हैं।

सुब्बम्मा : नमक माई नमक सब आओ और नमक लो।

हांथ से निकालकर नमक सबको दिखाती है।

अन्य स्त्रियाँ : नमक लो भाई नमक। (सब आपस में नमक बाँटती है)

सुब्बम्मा : महिलाओं ! नमक सत्याग्रह में भाग लीजिए। अंग्रेजों के छक्के छुडाइये। भारतमाता को आजाद करने के लिए आइये। यह लीजिए नमक, आइये आइये।

इतने में पुलिस आती है।

पुलिस १ : कहाँ है वह सुब्बम्मा ?

पुलिस २ : हमें धोखा देनेवाली सुब्बम्मा तथा अन्य स्त्रियाँ कहाँ हैं ?

(दोनो इधर - उधर ढूँढते हैं)

सुब्बम्मा : यहाँ रे यहाँ ! (नमक से भरा भाँडा दिखाती है) अरे ओ पुलिसवाले हमने नमक तैयार किया है ! सबमें बाँटा है ! तुम भी लो थोड़ा सा नमक। हमारा काम पूरा हो गया। क्या कर सके तुम ? यह हमारा देश है। धैर्य एवं साहस हमारे सहज लक्षण हैं। अब जो चाहे कर लो। (सारे भाँडे नीचे रखते हैं)

पुलिस १ : हमें धोखा देकर नमक तैयार करवाया ! शासन धिक्कार किया तुम लोगों ने ?

सुब्बम्मा : हाँ ! हाँ ! किया है शासन धिक्कार। क्या करोगे ?

पुलिस २ : (लाठी से घड़े सब तोड़ देता है)

सुब्बम्मा : इससे बढकर तुम कर भी क्या सकते हो ! खुद अपने बाल नोचलो ! लाठियाँ तोड ड़ालो। उन हंडियो के टूटे टुकड़े ले जाकर अपने साहबों को दिखाओ।

पुलिस १ : तुम लोगों को इस तरह छोड देने से काम नहीं चलेगा। चलो जेलखाने।

पुलिस २ : चलो जेलखाने।

(दोनों, औरतों के दोनों ओर खड़े हो जाते हैं)

सुब्बम्मा : स्त्री-शक्ति को तूने क्या समझ रखा है ? मुझे इन औरतों के साथ कैद करने मात्र से क्या सत्याग्रह बंद हो जायेगें ? चोलुंगी में ५०० स्त्रियाँ नमक तैयार करने के लिए तूफ़ान की तरह समुद्र की ओर जा रही हैं। अगर तुममें ताकत हो तो रोको उन महिलाओं को ! पश्चिमी गोदावरी जिले के गणपवरम से १०० महिलाएँ आदिशक्ति का अवतार बनकर निकलपड़ी हैं। तुममें सामर्थ्य हो तो रोको उन्हें ! कृष्णा जिले के मछलीपट्टणम में ५०० स्त्रियाँ नमक तैयार करने के लिए चल पड़ी हैं। तुम साहसी हो तो उन्हें रोको ! गुंटूरु से उन्नव लक्ष्मीबायम्मा नमक सत्याग्रह में भाग लेने के लिए महिलाओं के साथ ज्वार-भाटे की तरह चल पड़ी हैं। तुममें शक्ति हो तो रोको उन्हें। मद्रास में दुर्गाबायम्मा, आचंट रुक्मिणी लक्ष्मीपतीजी, प्रकाशमजी की धर्मपत्नी जैसी वीर नारियाँ समुद्र की ओर बढ रही हैं। रोक सको तो रोको उन्हें ! हमे कैद करने मात्र से सत्याग्रह रुकेंगे नहीं जनचैतन्य ही आंदोलन की जान है। मुझे कैद करोगे तो ५०० स्त्रियाँ आगे बढ़ेंगी। जानते हो यह अखण्डभारत है !

दोनो पुलिस : बस, बस करो तुम्हारा भाषण। हमारे जेल के भोजन से तुम्हारी बोलती, अपने आप बंद हो जाएगी।

सीतम्मा : हम जेल में आयेंगी तो किसका मुँह बंद हो जायगा हमारा या तुम्हारा देख लेंगे।

(सब पुलिस के साथ जाती हुई कहती हैं)

वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

देशबान्धवी

नाटक - चौथा अंक

चलो जेलखाने

दृश्य -

रायवेल्लूरु का जेल

दुब्बूटि सुब्बम्मा, पोणका कनकम्मा बैठी रहती हैं। सुब्बम्मा के हाथ में भगवद्गीता है।

पो. कनकम्मा :

सुब्बम्मा : अब आरंभ करो। तुम्हारे मुँहसे भगवद्गीता सुनने के लिए जेल के सभी लोग इन्तजार कर रहे है।

सुब्बम्मा : परित्राणाय साधूनां विनाशायच दुष्कृताम
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥

(दुष्ट शिक्षण एवं शिष्ट रक्षण के निमित्त, धर्म संस्थापन के लिए मैं प्रत्येक युग में अवतरित होता हूँ)।

पो. कनकम्मा : आहा क्या मिठास है तुम्हारी आवाज में सुब्बम्मा ! श्रीकृष्ण - परमात्मा का गीतोपदेश हमने देखा नहीं, लेकिन ऐसा लग रहा है मानो अब यह प्रत्यक्ष रूप से देख रहे हैं। अगर दुष्ट, शिक्षण एवं शिष्ट रक्षण के लिए अवतरित महानुभाव गाँधीजी हैं तो हम सब भी साझेदार हैं। पराये शासकों के अन्यायपूरित कार्यो को मिट्टी में मिलाकर धर्मयुक्त शासन कायम करने के लिए तुम्हारे द्वारा किया जानेवाला यह प्रयास प्रशंसनीय है। तुम्हारा जन्म सार्थक हुआ सुब्बम्मा, तुम्हारा जन्म सार्थक हुआ।

दु. सुब्बम्मा : सच कहा कनकम्मा ! मैं ही नहीं तुम,.वह सब उसी के लिए प्रयत्नशील हैं। उन गाँधीजी के आशयों को, आचरण के द्वारा दर्शाने का ही प्रयत्न कर रहे हैं हम सब। इस देश में अनेक नेता हैं। लेकिन गाँधीजी की बातें मंत्रोपदेश सदृश हैं। आन्ध्र प्रांत में इतनी बडी संख्या में स्त्रियों ने गाँधीजी को गहने समर्पित किये.अपने घर, जाति, मर्यादा सबकुछ छोड़कर गाँधीजी के साथ हो लिए। जानती हो इसका कारण क्या है ? आन्ध्र प्रांत में

गाँधीजीका पर्यटन ही है वह कारण। जिसने भी उनका भाषण सुना उनके साथ हो लिए।

पो. कनकम्मा : तुम्हारी बातें सच हैं सुब्बम्मा ! महाभारत कहता है कि किसी ने स्वर्ग-नरक देखा नहीं है। ऐसे स्वर्ग प्राप्ति की अभिलाषा के बदले, भारत भूमि की रक्षा के लिए हमारा प्रयास सचमुच महान है। इसी में हमारे जन्म की सार्थकता निहित है।

दु. सुब्बम्मा : कनकम्मा ! साधारण स्त्री तो तुम हो नहीं। महान विदुषी हो। ऐसा कोई विषय नहीं है जिसे तुम जानती नहीं। तुम्हारी कस्तूरबा पाठशाला कैसी चल रही है ?

पो. कनकम्मा : तुम्हारी बालिका सनातन पाठशाला जिस तरह चल रही है उसी तरह यह पाठशाला भी चल रही है। अनेक बालिकाओं के साथ स्त्रियों को भी पढ़ने का मौका मिल रहा है। उन्नव लक्ष्मीबायम्मा द्वारा स्थापित शारदा विद्यालय भी स्त्री-शिक्षा के विषय में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

दु. सुब्बम्मा : सच कहा ! अब तक दाताओं से प्राप्त धन के सहारे निःशुल्क भोजन एवं आवास का प्रबंध किया था। न जाने आगे क्या होगा ?

परदे के पीछे से वंदेमातरम् - वंदेमातरम् - सुनाई देता है)

शंखनाद की तरह इस कारागार में ये नारे कैसे ?

सीतम्मा : माई ! सुना तुमने यह मंगलमय निनाद !

सुब्बम्मा : हाँ, सुना है। लेकिन यहाँ आनेवाले वे पुण्य मूर्ति कौन है ?

सीतम्मा : और कौन ? हमारे आंदोलनकारी कार्यकर्ता ही है। अहिंसा एवं कार्यदीक्षारत कार्यकर्ताओं को मार-मार कर, उनका बहता खून देख आनंदित होते हुए उन्हे कैद करने के लिए यहाँ ला रहे हैं। सुना है, कुछ लोगों को चिडियों की तरह बंदूको से उडा दिया गया।

सुब्बम्मा : स्वदेश की रक्षा के लिए प्राणों को अर्पण करनेवाले अमरजीवियों की आत्मा को शांति मिले।

सीतम्मा : मद्रास में समुद्रीतट पर चुनौती देती हुई पुलिसवालों की नाक में दम कर नमक-सत्याग्रह को सफल करनेवाली दुर्गाबायम्मा को भी इसी जेल में लाया गया है।

(सुब्बम्मा, कनकम्मा उठकर खड़ी हो जाती हैं)

सुब्बम्मा : शाबाश ! दुर्गाबायम्मा साधारण स्त्री नहीं, महाकाली का अवतार ही है।

सीतम्मा : यही नहीं, वेदारण्य के शिविर में प्रवेश कर अंग्रेजों के खिलाफ बगावत करने की सूचना देते हुए रिजर्व पुलिस में करपत्र बाँटने वाली वीरांगना आचंट रूक्मिणी देवी भी विद्यमान है।

सुब्बम्मा : आहा क्या साहस है ! वीरनारी तो रूक्मिणी ही है।

(परदे के पीछे से)
वंदेमातरम् - वंदेमातरम् की आवाज आ रही है)
पेद्दाड सुब्बम्मा का प्रवेश।

सीतम्मा : पेद्दाड सुब्बम्मा ! क्यों घबराई हुई हो ? अब किसे लाया गया ?

सुब्बम्मा : और किसे लाया गया है सुब्बम्मा ?

पे. सुब्बम्मा : पुलिस से छिपकर घड़ो से पानी मंगवाकर नमक तैयार करवाने वाली वीर नारी उन्नव लक्ष्मीबायम्मा, गोदावरी एवं कृष्णा जिले में स्वयंसेविकाओं को जागृत करनेवाली गोगिनेनि भारतीदेवी को भी लाया गया है।

सुब्बम्मा : कितना भाग्यशाली है यह कारागार ! कितने ही देशभक्तों के चरणस्पर्श से पुनीत हो गया है। धन्य भाग्य इसके !

(सीतम्मा दूसरी ओर से अंदर आती है)

परदे के पीछे से,

हमारे लिए अति सुखमय है कारागार
ठीक समय पर नहाना, गरम-गरम खाना ।। हमारे ।।
अधिक कर वहाँ नहीं, दुर्गंध तो बिलकुल नहीं
सिमेंट से बने घर, अच्छे भले आँगन ।। हमारे ।।

गीत सुनाई दे रहे है। सुब्बम्मा तथा अन्य महिलाएँ गीत सुनती हैं।

सुब्बम्मा : न जाने जेल जीवन का आव्हान करनेवाले वे पुण्यमूर्ति कौन हैं ?

सीतम्मा का पुनः प्रवेश

सीतम्मा : और कौन ? कावूरु की रहनेवाली तुम्मल दुर्गाम्बा, चेब्रोलु निवासी वासिरेड्डि हनुमायम्मा, विजयवाडा की ओरुगंटि महलक्ष्मम्मा हैं। नमक सत्याग्रह में भाग लेने वाली वीरांगनाएँ !

परदे के पीछे

लाठियों, सीटियों, बंदूकों एवं दौड़ने की आवाजें !

दु. सुब्बम्मा : ये शोरगुल कैसा ? वेदांतम कमलादेवी दिखाई नहीं देती ?

पे. सुब्बम्मा : अपने अहिंसामूर्तियों को कैदखाने में ही बु़री तरह पीटनेवाले पुलिसवालों से लड रही है।

दु. सुब्बम्मा : क्यों ?

(इतने में एक स्त्री आकर सुब्बम्मा से कुछ कहती है)

सुब्बम्मा : उनसे कहो कि, हौसला रखें। उनकी खबर मैं लूँगी।

(जवाब सुनकर वह स्त्री चली जाती है)

(इतने में जेलर आता है)

सुब्बम्मा : क्या है जेलर भाई ! सी क्लास में रहनेवालों को कीड़ों से भरा चावल और बदबूदार दाल दे रहे हो खाने को ? हमारा खाना, तुम लोग पेटभर खाकर

हम लोगों को ऐसा खाना दोगे ? भारतवासियों को गुलाम समझ रखा है क्या ? अरे ओ भिखारी ! पीने का पानी भी अपने देश में ले जाने का इरादा है क्या ? कान खोल कर सुनलो ! अच्छा खाना और अच्छा पानी न दिया तो हड़ताल आरंभ करेंगी। **हड़ताल आरंभ करेंगी।**

(ऊपर ऊपर जाती है)

जेलर : (मूँछो पर ताव देते हुए) क्या करलोगी ?

सुब्बम्मा : मैं भी ताव दे सकती हूँ (अपनी मुण्डी पर हाथ फेरती हुई)

नाकों चने चबवायेंगी तुमसे ! हमारे गाँधीवादी अहिंसाव्रतियों को बुरी तरह पिटवाया तुमने ! तुम्हें तथा तुम्हारे परिजनों की हम भी अच्छी तरह पिटवाई कर सकती हैं। हम आन्ध्र की महिलाएँ तुम, अंग्रेजों के गुलामों को माफ कर छोड दे रही हैं। शांतियुत समर हमारे गाँधीजी का आशय है। हम अगर ठान लेंगी तो क्या कुछ नहीं कर सकतीं ? आइन्दा कभी स्त्रियों पर हाथ उठाया तो याद रखना ! हम क्या कर गुजरेंगी हमें खुद नहीं मालूम। खबरदार !

जेलर : (धीरे से) ये कहाँ की औरतें हैं बाबा ! ये औरतें नहीं बल्कि महाकाली का प्रतिरूप हैं। इनसे तो यमदूत भले !

सुब्बम्मा : क्या बक रहे हो ? हममें जो सुहागिने हैं उन्हें जेल में लाकर उनकी चूडियाँ क्यों तुड़वा रहे हो ? सुना है, बगैर कोर की साड़ियाँ पहनने को दे रहे हो ? सबको मेरी तरह बेवा समझ रहे हो क्या ? जानते हो सुहागिनों के लिए यह कितनी बुरी बात है ! आइन्दा कभी ऐसा नहीं होना चाहिए।

छड़ी उठाकर आगे बढ़ती है।

जेलर पीछे हटता है।

जेलर : हाथों में काँच की चूडियाँ रहने से उन्हें तोड़कर उनसे आत्महत्या करेंगी समझकर यहाँ आते ही उन्हें तुडवा देते हैं।

सुब्बम्मा : हमारी औरतें चोर नहीं है। हत्यारिनें नहीं है। अहिंसाव्रती देशभक्त हैं। फिर वही बात ! चूडियाँ तुड़वना क्या ? बड़ा भारी दोष है यह !

(दोंनो कान बंद कर) अमंगल प्रतिहत हो।

इतने में पट्टाभि सीतारामय्याजी आते हैं

सीतम्मा : माई ! सुब्बम्मा ! भोगराजु पट्टाभि सीतारामय्याजी आये हैं।

भोगराजु : वंदेमातरम् (हाथ जोड़ते हैं)

सुब्बम्मा : (सर उठाकर उनकी ओर देखकर) वंदेमातरम् (हाथ जोड़ती हैं)

क्यों जी भोगराजू ! यहाँ कैसे आना हुआ ? कारागार में सारी स्त्रियाँ सही सलामत हैं या नहीं देखने आये हो क्या ? ये मूर्ख, सुहागिनों की चूड़ियाँ तुड़वा रहे हैं ! इसे हम सह नहीं सकतीं। भाई बनने जैसी खोखली बातों से फायदा नहीं। इसके लिए कोई समाधान ढूँढ़ो !

भोगराजु : मै यूँ ही अपने आपको आपलोगों का भाई नहीं कहता। मै इन खादी कपडों की शपथ खाकर कहता हूँ कि जेल में आनेवाली सारी महिलाओं के लिए पीली रबड़ की चूड़ियाँ भिजवाऊँगा। अभी जेल के सूपरिंटेंडेंट से बात करूँगा।

सुब्बम्मा : तो पट्टाभि की बाते फिजूल की नहीं। ठोस काम करोगे !

भोगराजु : ठोस कार्य ही करूँगा। वंदेमातरम्।

सुब्बम्मा : वंदेमातरम्

(पट्टाभि सीतारामय्या चल पड़ते हैं)

देशबान्धवी

नाटक - चौथा अंक

चलो जेलखाने

दूसरा दृश्य

जेल के कमरे में - रात का समय

सुब्बम्मा बैठी रहती है। बगल में सीतम्मा और पेद्दाड सुब्बम्मा बैठी रहती हैं।

सुबम्मा : गजेन्द्र मोक्ष में, गजेन्द्र के दीनातिदीन होकर भगवान को पुकारने के संदर्भ का छन्द आलापती है।

सीतम्मा : मैया ! जेल की सींखचों के भीतर छटपटाते सभी लोगों में तुम्हारी मीठी आवाज जान फूँक रही है। इन अहिंसावादियों के दुःख दूर करनेवाला तो भगवान् ही है ! हमारी शक्ति एवं सामर्थ्य के लिए यह परीक्षा का समय है ।

पे. सुब्बम्मा : माई ! सुना तुमने ? हमारी दुर्गा बायम्मा को इस जेल से निकालकर मदुरै जेल में ले गये।

सुब्बम्मा : यह कैसा अन्याय ! हमसे छुपाकर पुलिसवाले यह काम कैसे कर सके ?

पे. सुब्बम्मा : हमें शक न हो इस तरह रात के अंधेरे में वॅान में चढाकर ले गये । कड़ी सजा भी सुनवाई गई है।

सुब्बम्मा : हाय ! दुर्गम्मा ! घोर अनर्थ हो गया। हमने तो सोचा था कि तुम कनकदुर्गा का अवतार ही हो। तुम जैसी को इतने कष्ट झेलने पड़ रहे हैं।

पे. सुब्बम्मा : कहते हैं कि उन्होंने जेलर से पूछा था कि वह क्यों हमें इतने कष्ट दे रहा है । इसीलिए उनके साथ ऐसा बर्ताव किया गया। वहाँ जाने के बाद उनकी सेहत बिलकुल बिगड़ गई है। सारे शरीर में फोडे निकल आये हैं।

सुब्बम्मा : दुर्गम्मा ! कैसी बातें सुननी पड़ रही हैं।

पे. सुब्बम्मा : हाँ माई ! हर दिन जुआरा कूटकर आटा बनवाया जा रहा है। उनसे जबरदस्ती मिर्च कुटवा रहे हैं। कह रहे हैं कि पीप निकलते फोडों पर मिर्ची की बुकुनी गिरने से मैया बहुत तड़प रही है।

सुब्बम्मा : हाय ! हाय ! अब और सुना नहीं जाता ।

(बहते आँसुओं को आँचल से पोंछती है। पे. सुब्बम्मा और सीतम्मा भी आँसू पोंछती हैं).

पे. सुब्बम्मा : सुना है उनके कमरे के दरवाजे हमेशा बंद रहते हैं। बासी चावल-दलिया दे रहे हैं। बेचारी खा नहीं पा रहीं हैं। इसलिए बहुत कमजोर हो गई हैं और चल-फिरने के लायक नहीं रहीं ।

सुब्बम्मा : ये बदमाश कैसी बुरी हरकतें कर रहे हैं ! बड़े पापी हैं ये। इनके हाथ टूट क्यों नहीं जाते ! इनकी आँखें फूट जातीं तो कितना अच्छा होता ! हम खबर लेंगी इन जेलरों की।

बत्ती बुझा देती हैं

सुब्बम्मा : हाय भूत ! हाय भूत !

सीतम्मा, पे. सुब्बम्मा : हाय हाय भूत ! हमारे ऊपर गिरकर हमें नोंच रहा है। बचाओ ! बचाओ ! (पे. सुब्बम्मा काली कम्बल ओढे रहती है। जोर से चीखती हैं)

जेलर और कान्सटेबल दौड़कर आते हैं।

जेलर : कहाँ है ? भूत कहाँ है ?
उधर देखते हुए यहाँ इतना अंधेरा क्यों है ?

पुलिस : वो देखो भूत ! वो रहा भूत ! काला है भूत !

(बत्ती जलाने जाता है। काली कम्बल ओढी हुई सुब्बम्मा दूसरी ओर भाग जाती है)

सीतम्मा : बाप रे बाप चुड़ैल भागे जा रही है।

पुलिस : मैं बड़े-बड़े चोर डाकुओं से नहीं डरता, हत्यारों से नहीं डरता। परन्तु भूतों से मुझे बहुत डर लगता है। उइ माँ ! उसी ओर भाग रही है। मैंने अपनी आँखों से देखा ! पुलिस थर-थर काँपने लगता है। जेलर भी थोड़ा डर जाता है।

जेलर बत्ती जलाता है। (कुछ-कुछ सम्हल कर)

जेलर : कहाँ है भूत ! कहाँ ? मार-मार कर ठिकाने लगा दूँगा।

सीतम्मा : बुरी तरह काँप रहे हो ! तुम क्या लगाओगे ठिकाने ? चुड़ैल के भाग जाने के बाद आने से क्या फायदा ?

सुब्बम्मा : चारों ओर फालतू पौधे, झाड-झंकाड़ भर गये हैं। एक छोटा जंगल सा बन गया है। भूत भी आयेंगे। साँप भी। कल सारा कचड़ा साफ करवा दो। शाम के समय उन पेड़ों के नीचे बैठेंगी हम। आई बात समझ में ?

जेलर : (धीरे से कहता हैं) ये कैसी बला है ? उस दुर्गाबायम्मा को तो यहाँ से दूसरी जेल में भेज दिया गया है। लेकिन इसे कोई भेज नहीं सक रहे हैं।

सुब्बम्मा : ये कानाफूसी क्या हो रही हैं ?

जेलर : (धीरे से पुलिस से) क्या यहाँ सचमुच भूत आया था ? इस कमरे की तीसरी औरत कहाँ है ?

पुलिस : (धीरे से जेलर से) थोडी देर और यहाँ रहेंगे तो और कैसी कैसी गालियाँ देगी। यहाँ से खिसक जाना अच्छा है।

सुब्बम्मा : अरे ओ जेलर ! बिना जवाब दिये चले क्यों जा रहे हो ?

जेलर : गनीमत है, ये सब रातोंरात करवाने के लिए नहीं कहा।

पुलिस : (धीरे से) थोड़ी देर और रुकेंगे तो हमी लोगों को करने के लिए कहेगी यह सब। हमारे भाग फूट गये जो हमारे पल्ले पड़ी। बाबा ! चलो चलो।

दोनो चले जाते हैं।

पे. सुब्बम्मा वापिस आती है।

सुब्बम्मा : नानी की याद आई। कायर कहीं के। कल दूसरी तरह नचायेंगी।
तीनों हँसती हैं।

समाप्त

देशबान्धवी

नाटक - चौथा अंक

चलो जेलखाने

तीसरा दृश्य

रायवेल्लूरु जेल

जेल का कमरा

सुब्बम्मा धरती पर बैठी रहती है।

सामने सीतम्मा बैठी रहती है।

(परदे के पीछे से)

"माई ! सुब्बम्मा ! पूजा का समय हो गया है। विशेषकर आज नवरात्री का अंतिम दिन है। आपको नहाधोकर आ जाना चाहिए।"

सुब्बम्मा : (सुनकर) सीतम्मा ! उनसे कहो, मैं आ रही हूँ। जेलर से बात करनी है। (सामने से जेलर आता दिखाई देता है)

सीतम्मा : जेलर इसी ओर आ रहा है।

सुब्बम्मा : ओ जेलर भाई ! जरा इधर आओ तो सही !

जेलर : (धीरे से) हाय राम ! आते ही इसकी नज़रों में अटका। दिखने से बस कुछ न कुछ काम अवश्य बताती है। न जाने अब क्या करना होगा ?

सुब्बम्मा : सामने खड़ी होकर बुला जो रही हूँ, सुना नही ? बहरे तो नहीं हो गये ?

जेलर : (धीरे से) खोटी तकदीर मेरी ! ये कहाँ की बला मेरे गले पड़ी। आवाज बुलंद करनी होगी। नहीं तो यह बिलकुल परवाह नहीं करेगी। (जोर से) क्या बात है ? तुम्हें कुछ काम-धाम नहीं है क्या ? मुझे बुला रही हो।

सुब्बम्मा : काम न हो तो तुम्हें क्यों बुलाती भला ! काम है इसीलिये तो बुला रही हूँ ! अभी तक कुछ कहा ही नहीं, नाक-भौंह सिकोडने लगे ! जो कुछ कह रही हूँ ध्यान से सुनो।

जेलर : सताओ मत, जो कुछ कहना हो साफ साफ कहो बाबा।

सुब्बम्मा : मैंने तो कुछ बताया भी नहीं, तुम कहने लगे सताओ मत ! तुम जेलर हो। यहाँ तरह तरह के लोग आते हैं। तुम्हे शांति से काम लेना होगा। तुम कौन से देवता की पूजा करते हो ? नवरात्री की पूजा करोगे तो करुणामयी दुर्गा मैया वरदान देगी।

जेलर : किसी भी देवता की पूजा करूँ, तुम्हें क्या करना है ? मुझे काम हैं। जाना है बाबा।

सुब्बम्मा : तुमको ही नहीं ! काम मुझे भी है । पूजा का समय हो रहा है । मुझे नहा धोकर जाना है । मैं जो कह रही हूँ अच्छी तरह याद रखो ।

जेलर : बताओ भी ! क्यों मेरे पीछे पडी हो ?

सुब्बम्मा : बताने के लिए रखा ही क्या है ? मामूली सी बातें हैं । आज नवरात्री की पूजा का आखरी दिन है । नैवेद्य के लिए सामान चाहिए । जल्दी से मंगवा दो ।

जेलर : अभी कल रात ही तो सामान लाकर दिया है न ? अब और क्या ?

सुब्बम्मा : सामन का मतलब चावल, मिर्ची, इमली से नहीं है ।

जेलर : फिर और क्या ?

सुब्बम्मा : नैवेद्य की सामग्री । चार दर्जन केले लाओ । सबको प्रसाद बाँटना है न ? सुन रहे हो न ? कल खीर और खट्टा चावल (पुलिहोरा) बनाया था । आज बूरेलु (एक तरह की मिठाई) बनाना चाहते हैं । चने की दाल, गेहूं का आटा, मैदा, गुड़ तेल और इलायची लाओ । आज नवरात्री का आखरी दिन हैं । बड़ा पवित्र दिन है ।

जेलर धीरे धीरे कुछ बोलता रहता है ।

पे. सुब्बम्मा : ये क्या अपने आप में बोले जा रहे हो ? कहीं हमारी सुब्बम्मा को गालियाँ तो नहीं दे रहे हो ?

सुब्बम्मा : भरवाँ बैंगन बनाने के लिए कँवले बैंगन, चटनी बनाने के लिए जरा पुराना नारियल लाना है । बहुत देर हो गई, अब चलो भाई ! हाँ ! दही भूलना मत । अच्छा घी भी लाना । समझ गये न ? अब चलो भी खड़े खड़े मुँह क्या ताक रहे हो ? तुम्हें भी प्रसाद देंगी । तुम भी क्या याद रखोगे हमारे हाथ का बना खाना ।

जेलर : (अपने आप में) ए क्लास के कैदी क्या कहलाये अपने आप को अफसर समझ रहे हैं । बाप रे बाप जान खा रहे हैं ।

सुब्बम्मा : सुनो जेलर भाई ! भोजन करने के लिए केले के पत्ते लाना न भूलना। तुम्हारे झूठे बर्तनों में खाने की आदत नहीं है। अब चलते बनो।

जेलर : (स्वगत) इनकी सेवा करने के बजाय नौकरी छोड़ देना बेहतर है।

सुब्बम्मा : हमारे साथ मनमाना व्यवहार करने का प्रयत्न न करना। वरना तुम्हें ठिकाने लगाकर ही जायेंगी हम।

सीतम्मा : माई तुमने ठीक कहा। तुम्ही इन्हें ठिकाने लगा सकती हो।

सुब्बम्मा : (परदे की ओर मुड़कर) देखो भाभी ! जयंति सूरम्मा, खाना बना रही हो न ? इन नवरात्रियों में खाना तुम्हीं ने बनाया है। आज भी तुम्हीं बनाओ। मुझे बहुत कुछ करना हैं। ऊपर से आने जाने वाले अलग। सुन लिया न ?

(परदे के पीछे से)

ये कौनसी बड़ी बात है माई ! तुम्हारे लिए तो अनेक काम हैं। मैं खाना बना ही लूँगी।

सुब्बम्मा : (परदे की ओर देखती हुई) सुब्बम्मा ! ओ पेद्दाड सुब्बम्मा ! तुम नहा धोकर पूजा की सामग्री तैयार करो। मैं भी नहाकर आजाऊँगी।

(सीतम्मा की ओर मुड़कर) देखो सीतम्मा ! तुम यहीं रहना। दु. सुब्बम्मा अंदर जाती है। सीतम्मा बैठी रहती है।

दो औरतों का प्रवेश।

स्त्रियाँ : हम दुव्वूरि सुब्बम्माजी को देखने आई हैं। हैं, न ?

सीतम्मा : वे पूजा कर रही हैं। बैठिये।

दोनों सीतम्मा की बगल में बैठ जाती हैं।
परदे के पीछे से घंटी बजने की आवाज आती है।
अयिगिरिनंदिनि नंदित मेदिनि विश्वविनोदिनि नंदिनुते
गिरिवर विंध्य सिरोधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते
भगवति हे सितिकण्ठ कुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूरिनुते
स्तोत्र सुनाई दे रहा है।

सुब्बम्मा का प्रवेश। एक हाथ में घंटी और दूसरे हाथ में पूजा की थाली।

सुब्बम्मा : जय जय हे महिशासुरमर्द्धिनि रम्य कपर्द्धिनि शैलसुते ॥

सीतम्मा तथा अन्य स्त्रियाँ उठकर खड़ी हो जाती है। सुब्बम्मा उन्हे पूजा के फूल देती है।

(परदे के पीछे से)

वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

(पे. सुब्बम्मा का प्रवेश)

पे. सुब्बम्मा : मैया ! ओ मैया ! सुना यह समाचार ? कैदियों को रिहा करने की बात मान ली गई है। सुना है सबको रिहा कर रहे हैं।

सीतम्मा : याने कि हम लोगों को भी छोड़ दिया जायगा ?

पे. सुब्बम्मा : हाँ ! हाँ ! हमें भी छोड़ दिया जायगा। हम लोगों को जल्दी निकल जाना चाहिए।

दोनों स्त्रियाँ : माई सुब्बम्मा ! नमस्कार ! तुम्हें देखने के लिए आई हैं हम। तुम्हारी वीरगाथाएँ जगह जगह पर सुनाई दे रही हैं। एक बार जी भरकर तुम्हें देख लेने दो।

सुब्बम्मा : मैंने क्या किया ? राष्ट्रीय नेता गाँधीजी की आशय सिद्धि हमारा कर्तव्य है। भारतवासियों की मुक्ति ही हमारा लक्ष्य है। मेरे बारे में कहानियाँ सुनने मात्र से कोई फायदा नहीं। तुम भी कार्यकर्ताओं में भर्ती हो जाओ। स्वच्छ हृदय से आंदोलन में शामिल हो जाओ।

दोनों स्त्रियाँ : मैया ! तुमने हमारा अज्ञान दूर किया। हम दीक्षा ग्रहण करेंगी। अब आंदोलन कोई भी हो, हम तुम्हारा अनुसरण करेंगी। हमें आशीष दो।

दोनों सुब्बम्मा के चरणों का स्पर्श करती हैं।

सुब्बम्मा : उठो ! हर अच्छे काम करनेवालों को भगवान् एवं भारतमाता के आशीष अवश्य मिलेंगे।

परदे के पीछे से

वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

सुब्बम्मा तथा अन्य स्त्रियाँ : वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

जेल की कोठरी से बाहर आ रही है। (बगल में छोटी-छोटी गठरियाँ दबाये हैं।

समाप्त

देशबान्धवी

नाटक - पाँचवा अंक

क्विट इंडिया

पहला दृश्य

शराब की दूकान बंद रहती है

"त्रागुडु पिशाचमा इंक तरलिपोम्मु
मोगलाइ पादुषाल गुलामुलुग चेसि
स्वैर विहारम्मु सल्पिनाउ
त्रागुडु पिशाचमा इंक तरलिपोम्मु"

(ऐ शराब रूपी पिशाच ! अब चली जाओ यहाँ से। तुमने मुगल बादशाहों को गुलाम बनाकर स्वैर विहार किया। ऐ शराब रूपी पिशाच अब चली जाओ यहाँ से।)

परदे के पीछे से

क्विट इंडिया - क्विट इंडिया

सीटियाँ, जूतों की आहट, लाठियों और बंदूकों की आवाजे सुनाई दे रही हैं।

दुव्वूरि सुब्बम्मा, सीतम्मा, पेद्दाड सुब्बम्मा का प्रवेश।

(तीनों की वेश-भूषा पहले जैसी ही है)

सुब्बम्मा : आन्ध्र की महिलाओं ! शराब की दूकानों को बंद करवाओ। चाहे कितने ही कष्टों का सामना करना पड़े, शराब की दूकानों को बंद करवाइये। पिकेटिंग कीजिए। बंद करवाइये शराब की दूकानों को।

दु. सुब्बम्मा : क्विट इंडिया - क्विट इंडिया

पे. सुब्बम्मा,
सीतम्मा : क्विट इंडिया - क्विट इंडिया

वंदेमातरम् - वंदेमातरम् - वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

परदे के पीछे से

सीटियाँ, जूते, लाठी एवं बंदूकों की मिली-जुली आवाजें आ रही हैं।

पुलिस का प्रवेश

पुलिस १ : कहाँ है ? सुब्बम्मा कहाँ है ?

पुलिस २ : बाप रे बाप ! इन औरतों को अरेस्ट करते करते कलेजा मुँह को आ रहा है। कैसा साहस है इनका ! ये तो मर्दों से भी बढ़ी चढ़ी हैं। हमारे लिए तो ये भूत हैं, पिशाच हैं।

दु. सुब्बम्मा : शराब की दूकानों को बंद करवाइये। पिकेटिंग कीजिए। शराब की दूकानों को बंद करवाइये।

पे. सुब्बम्मा : पिकेटिंग कीजिए।

सीतम्मा : क्विट इंडिया ! क्विट इंडिया !

माताओं ! जब तक ये गोरे भारत छोड़कर चले नहीं जाते, तब तक हमें यह लड़ाई जारी रखनी होगी।

क्विट इंडिया - क्विट इंडिया

दु. सुब्बम्मा पे. सुब्बम्मा : वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

सीतम्मा : जब तक हमारी जीत नहीं होगी, आंदोलन जारी रखिए, रोकिये मत। शराब की दूकानों को बंद करवाइये।

पुलिस १ : वो देखो ! वहाँ हैं. वहाँ।

पुलिस २ : रुक जाओ ! वहीं रुक जाओ।

पुलिस १ : मारो ! (तीनों का पीछा करते हैं)

तीनों स्त्रियाँ : क्विट इंडिया ! क्विट इंडिया ।

वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

पुलिस १
पुलिस २ : तीनों को लाठियों से बुरी तरह पीटते हैं

तीनो स्त्रियाँ : वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

(जमीन पर गिर जाती हैं)
पुलिसवाले चले जाते हैं)
समाप्त

देशबान्धवी

नाटक पाँचवा अंक

क्विट इंडिया

बालिका सनातन पाठशाला के सामने की बैठक

दूसरा दृश्य

राष्ट्रीय झंडे को फहराने के लिए आओ भाई ! सब आओ ! शत्रुओं की भारी बममारी पर कोल भील जातियों के लोगों द्वारा बहाये गये खून से सनी धरती पर झंडा फहराओ !
भारत जाति मुक्त होगी ।)
वंदेमातरम् - वंदेमातरम्
सीटियाँ, जूतों, लाठियों, बंदूकों एवं दौड़ने की आवाजें आ रही हैं ।
छड़ी और झोली के साथ सुब्बम्मा का प्रवेश

दु. सुब्बम्मा : सीतम्मा, सुब्बम्मा अभी तक नहीं आये । गोरों के गुलाम, कार्यकर्ताओं को खूब पीट रहे हैं । गोलियाँ चला रहे हैं । न जाने इनका शासन कब खत्म होगा ! न जाने ये सीतम्मा और सुब्बम्मा कहाँ चली गईं ?
(छड़ी बगल में रखकर जमीन पर बैठ जाती है)
(इतने में हाँफती हुई सीतम्मा प्रवेश करती हैं)

सीतम्मा : वंदेमातरम् (प्रणाम करती हैं)

दु. सुब्बम्मा : वंदेमातरम् (प्रणाम करती हैं)

सीतम्मा : माई ! सुनी यह खबर ?

दु. सुब्बम्मा : आखिर बात क्या है, बताओ तो सही ! तुम देर से आई हो कोई खास बात तो होगी ही । बताओ !

सीतम्मा : उद्दराजु माणिक्याम्बा, पसल अंजलक्ष्मी, कम्भंपाटि माणिक्याम्बा गुज्जु नागरत्नम आदि वीरांगनाएँ पसल कृष्णमूर्तीजी के नेतृत्व में भीमवरम् तहसील आफिस से होते हुए नजदीक के रास्ते से निकल पड़ी हैं । पुलिस आदि रेल और बसों में रवाना हुए । मंगलवाद्यों के साथ राष्ट्रीयगीत गाते हुए हमारे लोग भीमवरम् तहसील आफिस के पास पहुँच गये हैं । सबके साथ ऊपर चढ़कर उद्दराजु माणिक्याम्बा ने भी शासकों का झंडा निकाल दिया । उनके साथ हमारी स्त्रियाँ सब हैं । हमारे लोग काँग्रेस झंडा फहरा रहे थे इतने में पुलिसवालों ने आकर अपने अहिंसाव्रतियों को खूब मारा । एक ओर मार खाते रहे लेकिन जबतक झंडा फहराया नहीं गया, उन्होंने दम नहीं लिया । पसल अंजलक्ष्मी के पाँव भारी हैं । छटवाँ महीना चल रहा हैं ।

दु. सुब्बम्मा : अच्छा तो हमारे लोगों ने पुलिसवालों को नीचा दिखाया । उन लोगों ने उस गर्भवती को तो कुछ नहीं किया न ?

सीतम्मा : सबको कैद कर रायवेल्लूरु जेल में ले गये हैं । बेचारी गर्भवती स्त्री पर भी उन्हें दया न आई, उसे भी कैद कर लिया गया हैं । वह अपने बेटे को गोद में लिए ही जेल गई । उद्दराजु माणिक्याम्बा ने झंडा फहराते हुए गीत गाया था । उन्हें पुकारेंगे तो बस उनके मुँह से गीत निकलते हैं । इतना ही नहीं वह पेड़ों पर, दिवारों पर आसानी से चढ़ जाती हैं । बडी साहसी है । सारा प्रोत्साहन उनके पति रामन् जी का है ।

दु. सुब्बम्मा : तो वे जिस जेल में रहेंगी वहाँ गीतों की कमी नहीं होगी । जेल में दीवारों पर चढ़कर जो काम करना होगा, कर सकेंगी । उनकी बहुत जरूरत होगी ।

(पे. सुब्बम्मा हाँफती हुई आती है)

पे. सुब्बम्मा : वंदेमातरम् । माई सुना तुमने ? काट्रगड्ड रामसीतम्मा को, स्वातंत्र्य समरवीरों को आश्रय देकर शासनोल्लंघन करने के बहाने लाठियों से खूब मारना ही नहीं बल्कि कड़ी सजा के साथ-साथ ४०० रु. जुर्माना भी भरने के लिए कहा गया है। वह जुर्माना भर नहीं सकी। इसलिए रोटी सेकने के तवे से लेकर घरका सारा सामान नीलाम कर दिया गया। नीलाम में आई रकम के कम पडने से उनकी चूड़ियाँ भी जबरदस्ती उतार ली गईं।

दु. सुब्बम्मा : हाय ! आजादी की लड़ाई में सक्रिय भाग लेने वाली रामसीतम्मा को कितना कष्ट उठाना पड़ा ! इन गोरों के अत्याचार दिन ब दिन बढ़ते जा रहे हैं। नाश हो जाय इनका शासन। कैसा अनर्थ हो गया !

पे. सुब्बम्मा : इतना ही नहीं, वेल्लूरु जेल में सजा भुगत रही रामसीतम्मा को लकवा मार गया। उन्हें मुर्दाघर में डाल दिया गया। किसीने देखकर उन्हें ले जाकर इलाज करवाया।

सीतम्मा : न जाने वह महान् व्यक्ति कौन है, जो उनके लिए साक्षात् भगवान ही सिद्ध हुआ।

पे. सुब्बम्मा : अपनी सजा पूरी कर वे घर लौट रही हैं।

दु. सुब्बम्मा : हरिजनोद्धारण के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करनेवाली एक महान् मार्गदर्शिका को इतने कष्ट सहने पड़े ! स्वातंत्र्य समरवीरों, अहिंसाव्रतियों को आश्रय देकर मुट्ठी भर अन्न खिलाने के बदले में इतनी बडी सजाएँ भुगतनी पडीं ! हाय रे हाय यह कैसा शासन है ! हम स्त्रियों का शाप इनको अवश्य लगेगा। इनके शासन का अंत होकर ही रहेगा।

पे. सुब्बम्मा : माई ! अपनी पालडुगु वरलक्ष्मम्मा की खबर सुनी तुमने ? कहते हैं कि उसने मुदुनूरु के मेले में अपना झंडा फहराकर एक आदर्श की स्थापना कर दी है। सुना है उसने पुलिस की नाक में दम कर रखा है।

दु. सुब्बम्मा : शाबास सुब्बम्मा ! अच्छी खबर सुनाई तुमने ।

पे. सुब्बम्मा : और सुनो ! अपनी वल्लभनेनि सीतामहालक्ष्मी ने क्या किया जानती हो ? शराब की दूकानों के सामने, विदेशी वस्त्रों की दूकानों के सामने पिकेटिंग करवा रही थी तो पुलिसवालों ने उसे कीचड़, रंग तथा मिर्ची की बुकुनी मिले पानी से शराबोर कर दिया । वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ी है ।

दु. सुब्बम्मा : हाय कैसा अनर्थ हो गया ! उस त्यागमूर्ति को मारने के लिए न जाने उनके हाथ कैसे उठे होंगे । उनकी लाठियाँ टूट क्यों नहीं गई ! फिर क्या हुआ सुब्बम्मा ?

पे. सुब्बम्मा : वे कब परवाह करने लगीं इन सबकी ! फिर से उठी स्वयंसेविकाओं के साथ झाँसी की रानी की तरह और भड़क उठी । एर्नेनि सुब्रमण्यमजी द्वारा संचालित गाँधी आश्रम को हस्तगत कर पुलिसवालों ने ताला लगाया था । अपनी सीतामहालक्ष्मी ने पिछवाड़े से धावा किया । पुलिस मारे डर के भाग गई ! सीतामहालक्ष्मम्मा ने आश्रम पर कब्जा कर गुडिवाडा प्रांत में तहलका मचा दिया ।

दु. सुब्बम्मा : क्या साहस दिखाया ! धर्म हमारे पक्ष में है । अब हमारे विजयी होने का समय आ गया है ।

वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

सीतम्मा : दिगुमुर्ति बुच्चिकृष्णम्मा, गाडिचेर्ल शेषाबाई, एस. सुब्बम्मा, पालकोडेटि श्यामलाम्बा आदि ने मिलकर १४४ सेक्शन का धिक्कार करते हुए शराब की दूकानों तथा विदेशी वस्त्रों की दूकानों के सामने पिकेटिंग करते हुए पुलिस को खूब सताया है ।

दु. सुब्बम्मा : अब अंग्रेजों के लौट जाने के दिन आ गये हैं । हम महिलाएँ सब एक साथ टूट पडेंगी तो इस विदेशी शासक को बोरिया-बिस्तर बाँध लेना ही पड़ेगा । व्यष्टि सत्याग्रह गाँव-गाँव में होने चाहिए । हम महिलाओं को नेतृत्व करना है ।

सीतम्मा : सच कहा माई ! मागंटि अन्नपूर्णम्मा, तिलक स्वराज्य निधि में अपने सारे गहने गाँधीजी को समर्पित करना ही नहीं बल्कि सभी प्रांतों में घूम-घूमकर स्त्रियों को आंदोलन की ओर ले चलने का भरपूर यत्न कर रही है। जमींदारी -कृषक आंदोलन में प्रधान भूमिका निभा रही है।

दु. सुब्बम्मा : हमारी महिलाएँ अपने धैर्य एवं साहस का परिचय दे रही हैं जिसे देखकर सारा महिला समाज खुशी से झूम रहा है। विदेशी शासकों को थर-थर काँपने पर मजबूर कर रही हैं। गुंटूरु में रहस्य राजनैतिक सभा का आयोजन हुआ था। वेदांतम कमलादेवी ने अध्यक्षा बन, सभा का संचालन किया था। एक अन्य सभा में मानाप्रगड विश्वसुंदरम्मा, भीमवरम् की सभा में लावु अंकम्मा, बापट्ला में कंभंपाटिमाणिक्याम्बा, तेनालि में टेकुमल्लु अच्युतम्मा, कैलसपट्टणम में भवनम तिरुमलम्मा, इन सब की अध्यक्षता में विविध सभाओं का संचालन हुआ। गोरे यह देख जल भुन गये और सब लोगों को जेल के हवाले कर दिया।

दु. सुब्बम्मा : इनके अत्याचार बढ़ते ही जा रहे हैं। हमारे कार्यकर्ताओं को देखकर बरदाश्त नहीं कर पा रहे हैं। लाठियों से पीटकर, गोलियाँ चलाकर खुश हो रहे हैं।

सीतम्मा : उनकी आँखे फूट क्यों नहीं गई ? अब इनके शासन का जल्द पतन हो जाना चाहिए।

दु. सुब्बम्मा : स्त्रियाँ केवल राजनैतिक क्षेत्र में ही नहीं बल्कि पत्रिका संचालन के क्षेत्र में भी अखण्ड ख्याति प्राप्त कर रही हैं। विद्या के क्षेत्र में तो कहना क्या ? श्रीमती बालांत्रपु शेषम्माजी 'हिन्दू सुन्दरी', पत्रिका के लिए, पुलुगुर्त लक्ष्मीनरसमाम्बाजी, 'सावित्री', पत्रिका के लिए विंजमूरि वेकंटरत्नम्माजी, 'अनसूया' पत्रिका के लिए सम्पादिकाएँ बन कार्यभार वहन कर रही हैं। स्त्रियों में चैतन्य लाने का प्रयास कर रही हैं। गुंटूरु जिले के बापट्ला में कनुपर्ति वरलक्ष्म्मा ने स्त्री हितैषिणी मंडली की स्थापना कर, सतीश्रेय को

ही लक्ष्य बनाकर महिलाभ्युदय के कार्यक्रम चला रही हैं। अब यह नारी जागरण रुकनेवाला नहीं है। उत्तुंग तरंगमालाओं के विन्यास से चलता ही रहेगा। आज मुझे शांति मिली। अब हमारा विजय अवश्यंभावी है। (परदे के पीछे से)

माई सुब्बम्मा ! व्यष्टि सत्याग्रह के लिए चल पड़ने का समय आगया है। चलना चाहिए। आपको चलना चाहिए।

वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

सुनाई दे रहा है।

दु. सुब्बम्मा : सुब्बम्मा ! सीतम्मा ! अब हमें चलना चाहिए। समय आसन्न हुआ है। कालीमाई की तरह, कनकदुर्गा की तरह टूट पड़ो।

वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

पे.सुब्बम्मा, सीतम्मा : वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

क्विट इंडिया - क्विट इंडिया

हमारा देश छोड़ दो हमारा देश छोड़ दो

परदे के पीछे से

पुलिस की सीटियाँ लोगों के दौड़ने की आहट, जूतों, लाठी एवं बंदूकों की आवाजें आ रही हैं।

दु. सुब्बम्मा पे. सुब्बम्मा : वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

तीनों रवाना होती है।

समाप्त

देशबान्धवी

नाटक पाँचवा अंक

क्विट इंडिया

तीसरा दृश्य

मुहल्ले में

परदे के पीछे से

दण्डालंडोयि बाबु - मेमुण्डलेमण्डोयि बाबु
देशभक्ति तोड मेमु - तिरुगुतुण्डगाने बाबु
राजद्रोहुलुंटु मम्मु - रच्चपेड्डुताडु बाबु
दंडालंडोयिबाबु - मेमुंडलेमण्डोयि बाबु

(राम राम बाबू! अब हम नहीं रह सकते हैं बाबू! देश भक्ति भरे दिलों से घूमते हम लोगों को राजद्रोही ठहराकर सता रहे है बाबू, रामराम बाबू अब हम नहीं रह सकते।)

क्विट इंडिया क्विट इंडिया

विजय - वीरगति - विजय वीरगति

पुलिस की सीटियाँ, लाठी, बंदूक तथा जूतों की आवाजे आ रही हैं।

दु. सुब्बम्मा, सीतम्मा, पे. सुब्बम्मा का प्रवेश

दु. सुब्बम्मा : आन्ध्र - महिलाओं! क्विट इंडिया आंदोलन को सफल बनाइये। विजय या वीरगति। यही हमारी आखरी लडाई है। गाँधीजी को ही नहीं बल्कि हमारे सभी नेताओं को कैद कर लिया गया है। उन्हें जेल में बंद कर, इससे आंदोलन बंद हो जायेगा समझकर फिरंगी खुशियाँ मना रहा है। उनकी आशाओं पर पानी फेर देना चाहिए।

सीतम्मा : उसके निरंकुश शासन को नीचा दिखाइये। 'कर' देना बंद कर दीजिए।

दु. सुब्बम्मा : विद्यार्थियों! पाठशालाओं में मत जाइये। जन्मभूमि के भविष्यके हित में अपना भविष्य दाँव पे लगा दीजिए। विद्यार्थियों! पाठशालाओं में न जाइये। आंदोलन को अपनाइये।

पे. सुब्बम्मा : बाबा ! नौकरियों को इस्तीफा दे दीजिए। आंदोलन में हाथ बटाइये।

सीतम्मा : वकीलों अदालतों में न जाइये। भारतमाता के भविष्य के लिए सहारा बनिये।

परदे के पीछे से

क्विट इंडिया - क्विट इंडिया

वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

जूतों, लाठियों, सीटियों, बंदूकों की आवाजे सुनाई दे रही हैं।

पुलिस का प्रवेश

पुलिस १ : मारो !

पुलिस २ : (लाठियों से तीनों को बुरी तरह पीटते है)

दु. सुब्बम्मा :
पे. सुब्बम्मा, सीतम्मा : वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

क्विट इंडिया - क्विट इंडिया

विजय या वीरगति - विजय या वीरगति

पुलिस २ : इन्हें मारना मेरे वश की बात नहीं है। लाठियाँ टूट रही हैं। मेरे हाथ बहुत दुःख रहे हैं। लेकिन इनके मुँह बंद होने का नाम नहीं लेते।

पुलिस १ : मारो !

पुलिस २ : (फिर लाठी से तीनों को मारता है)

दु. सुब्बम्मा, पे. सुब्बम्मा, सीतम्मा : वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

क्विट इंडिया - क्विट इंडिया

विजय या वीरगति - विजय या वीरगति

तीनों जमीन पर गिर जाती हैं।

पुलिसवाले चले जाते हैं।

समाप्त

देशबान्धवी

नाटक - पाँचवा अंक

क्विट इंडिया

एक रास्ते पर

चौथा दृश्य

(परदे के पीछे सो)

''वंदेमातरम् - वंदेमातरम्
क्विट इंडिया - क्विट इंडिया
विजय या वीरगति - विजय या वीरगति
तरह तरह की आवाजें आ रही हैं।
दु. सुब्बम्मा एवं सीतम्मा का प्रवेश

दु. सुब्बम्मा : सीतम्मा ! अपनी सुब्बम्मा कहाँ है ? पता नहीं कहाँ चली गयी बंदूकों का निशाना तो नहीं बन गई !

सीतम्मा : नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। हमारे लिए कुछ खबर ला रही होगी।

दु. सुब्बम्मा : सच कहा। हम दोनों के बिना सुब्बम्मा कहाँ जायगी।

हाँफती हुई पे. सुब्बम्मा का प्रवेश

दु. सुब्बम्मा : क्या हुआ सुब्बम्मा ! क्यों बुरी तरह हाँफ रही हो ? कहो क्या हुआ ?

पे. सुब्बम्मा : अपनी सूर्यदेवर राज्यलक्ष्मी देवी को जानती हो न ! उन्होंने चेब्रोलु में राजनैतिक पाठशाला की स्थापना की थी। व्यष्टि सत्याग्रह के सिलसिले में जेल की सजा काट चुकी है। हिन्दी पाठशाला भी चला रही है, जानती हो न ?

दु. सुब्बम्मा : क्यों नहीं ? आंदोलन कार्यकर्ता सूर्यदेवर अन्नपूर्णम्मा की छोटी बहन ही है न यह राज्यलक्ष्मी ?

पे. सुबम्मा : हाँ वही है। हमारे सारे नेता जेलखाने में हैं न ! सुना है कि गाँधीजी के आदेशानुसार वह पुरुष वेश में घूम रही है। उसे घर आई जानकर पुलिस ने पीछा किया। पुलिस को चकमा देकर वह भाग गई। पुलिस उसकी छानबीन कर रही है।

दु. सुब्बम्मा : आहा ! क्या साहस है ! मेरे रोगंटे खड़े हो रहे हैं। उम्र में भले ही वह छोटी हो पर साहस के मामले में महान है। आन्ध्र महिला की जय हो ! जय हो !

परदे के पीछे से

कस्तूरबा गाँधी अमर है

कस्तुरबा गाँधी अमर है

पराया शासन नाश हो

पराया शासन नाश हो

पीछे से सुनाई दे रहा है

इतने में बंदूकों की आवाजे तथा सीटियाँ सुनाई देती है।

दु. सुब्बम्मा : क्विट इंडिया आंदोलन में कैद होकर जेल में रहनेवाली उस महासाध्वी को क्या हुआ ? अमर हैं कह रहे है, कहीं ... गुजर तो नहीं गई !

सीतम्मा : मैं देख आऊँगी।

(बाहर जाती है)

(परदे के पीछे से)

कस्तूरबा अमर हैं

कस्तूरबा अमर हैं

रेल की पटरियाँ उखाड़ फेंको

टेलिग्राफ-खम्बे गिरादो

वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

जूतों, सीटियों, बंदूकों की आवाजें आ रही हैं।

सीतम्मा लौटकर आती है

सीतम्मा : मैया ! सुब्बम्मा ! कस्तूरबागाँधी हम सबको छोड़कर चल बसीं। अस्वस्थ तो थीं ही कारागार में ही उनका देहान्त हो गया। मारे क्रोध के हमारे कार्यकर्ता भड़क उठे। रेल की पटरियों को उखाड़ फेंका। टेलिग्राफ-खम्बें गिरा दिये। भीड़ पर काबू न पा सकनें के कारण सुना है अंग्रेज शासकों नें कई जगह बम मारी की !

दु. सुब्बम्मा : माँ कस्तूरबा की आत्मशांति के लिए हम प्रार्थना करेंगी।

(तीनों हाथ जोड़कर खड़ी होती हैं)

सीतम्मा, पे.सुब्बम्मा : कस्तूरबा जिदांबाद ! विदेशी शासक दूर हटो ! अब भारतमाता को शांति मिलनी चाहिए ? शोक दूर होना चाहिए।

दु. सुब्बम्मा : कस्तूरबा जिंदाबाद। विदेशी शासक दूर हटो।

विजय या वीरगति - वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

पुलिस का प्रवेश

पुलिस १ : मारो ! मारो !

पुलिस २ : (लाठी से खूब पीटता है) चलो जेलखाने चलो

तीनों : वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

क्विट इंडिया - क्विट इंडिया

पुलिस १ : मारो !

पुलिस २ : मुँह बंद करो।

(फिर लाठी से मारता है)

दु. सुब्बम्मा : क्विट इंडिया - क्विट इंडिया

सीतम्मा : विजय या वीरगति ! विजय या वीरगति !

पे. सुब्बम्मा : वंदेमातरम् - वंदेमातरम्

पुलिस १ : चलो जेल में चलो।

पुलिस २ : हाँ ! चलो जेल में चलो।

दु. सुब्बम्मा : अरे ओ पुलिस के बच्चे ! गोरों के गुलाम ! तुमने क्या समझा कि हम जेल से डरती हैं ? उस श्रीकृष्ण जन्मस्थान में हम कई बार जा चुकी हैं। खादी आंदोलन, नमक सत्याग्रह, व्यष्टि सत्याग्रह अब इस क्विट इंडिया आंदोलन में जेलखाने में जगह न रहने से हमारी उपस्थिति न सह सकने से तुम्ही छोड़ दोगे। आंदोलनों के इतिहास में यह आखरी घटना है। करो कैद हमें ! मुझे कैद करने से मेरे साथ लाखों स्वयंसेविकाएँ आगे बढेंगी। हमारा शाप अवश्य लगेगा जिससे तुम्हारी सरकार का सत्यानाश हो जाएगा। बनाओ बंदी हमें।

(हाथ सामने फैलाती हुई दु.सुब्बम्मा आगे की ओर बढ़ती है)

(पुलिस पीछे हटते हैं)

देशबान्धवी

नाटक - छटवाँ अंक

स्वंतत्र देश है हमारा

बालिका सनातन पाठशाला

(परदे के पीछे मंगलवाद्य बजते रहते है)

मादी स्वतंत्र देशम

मादी स्वतंत्र जाति

भरतदेशमें मादेशम

भारतीयुलम मा प्रजलम

(देश हमारा स्वतंत्र है, जाति हमारी स्वतंत्र है, हमारा देश भारत है और हम भारतवासी हैं) गीत सुनाई दे रहा है।

सीतम्मा : मातओं ! विदेशी हमारा देश छोड़कर चले गये। हमारे सपने साकार हुए। अब माई सुब्बम्मा को आना चाहिए। उनके आने का समय हो गया है।

पे. सुब्बम्मा : दीवार पर गाँधीजी की तसवीर टंगाती है।

(पीछे से गीत सुनाई दे रहा है)

रगिलिंदि प्रजाशक्ति
म्रोगिंदि विजयभेरी
एगिरिंदि त्रिवर्णपताकम्
अद्धरात्रि तूर्पु कोंड पै सूर्योदयम्

(जनशक्ति भभक उठी, विजय भेरी बज उठी, झूमनेलगा तिरंगा, आधी रात में पूर्वी पहाड़ पर सूर्योदय हुआ।)

सीतम्मा : भारतमाता की जंजीरों को तोड़ फेंका। आजादी हासिल की माई! सुब्बम्मा तुम्हें आ जाना चाहिए। सब तुम्हारी राह देख रहे हैं।

(परदे के पीछे से)

जय जय प्रिय भारत
जनयित्री दिव्यधात्रि
जय जय जय शतसहस्त्र
नर नारी हृदयनेत्रि

(चार बालिकाएँ और दो स्त्रियों का राष्ट्रीय झंडों के साथ प्रवेश)

सीतम्मा : आइये! आइये! इधर आइये!
(चारो बालिकाओं को एक ओर बिठाती है)

पे. सुब्बम्मा : आप इधर आइये!
(दोनों स्त्रियों को दूसरी ओर बिठाती है)

(पीछे की ओर बाजे बज रहे हैं)

सीतम्मा : मैया सुब्बम्मा के आने का समय हो गया है)

पे. सुब्बम्मा : आप सब लोग ठीक तरह खड़े हो जाइये।

(परदे के पीछे से)

बोलो स्वतंत्र भारतमाता की जय
महात्मा गाँधीजी की जय
देशबान्धवी दुब्बूटि सुब्बम्मा की जय
(दु. सुब्बम्मा का प्रवेश)

सीतम्मा,
पे. सुब्बम्मा : आओ ! माई सुब्बम्मा ! आओ !

देशबान्धवी दुब्बूटि सुब्बम्मा जिन्दाबाद
देशबान्धवी दुब्बूटि सुब्बम्मा जिन्दाबाद
(सब साथ देते हैं)

सीतम्मा : यहाँ बैठो मैया (कुर्सी हाथ से साफ करती है)

पे. सुब्बम्मा : इस कुर्सी पर बैठो माई !

सीतम्मा : यह हार माई के गले में पहनाओ (बालिका पहनाती है)

सब तालियाँ बजाती हैं। सब एक के बाद एक आकर माल्यार्पण करती हैं। सीतम्मा और सुब्बम्मा भी मालाएँ पहनाती हैं।

दु. सुब्बम्मा : क्या है सीतम्मा ! यह सब क्या है ? ये पुष्प हार मेरे गले में नहीं गाँधीजी के गले में पहनानी चाहिए।

पीछे से मंगलवाद्य सुनाई दे रहे हैं।

सीतम्मा : महात्मागाँधीजी सबके लिए महान है। लेकिन माई ! तुम हमारे लिए महान हो। गुलामी के अंधकार को दूर हटाने के लिए तुमने जो कष्ट उठाया उसे हमने अपनी आँखो से देखा। अपनी जमीन - जायदाद, ताकत सबकुछ देशार्पण करनेवाली त्यागमूर्ति हो तुम ! तुम्हारे सपने पूरे हुए। हम सब स्वतंत्र वातावरण में साँस ले रही हैं।

पे. सुब्बम्मा: मैया ! अर्द्धरात्रि के अंधेरे में ओ देखो उधर पूरब की दिशा में सूर्योदय हुआ है। स्वतंत्रता की रश्मियाँ दसोदिशाओं में फैल रही हैं। सारी जनता आनंदोत्साह के साथ उत्सव मना रही है। तिरंगे झंडे आकाश को चूम रहे हैं।

सुब्बम्मा : (कुर्सी पर से उठती है। बगल में रखी हुई टोकरी उठाती हैं) खाओ ! इस शुभ अवसर पर मुँह मीठा करो। अपने अतरंग को मीठा करो। अपनी बातों में मिठास भर दो। अपनी सेवाओं को सुमधुर बनाओ।

सब में मिठाई बाँटती हैं। वे तीनों भी एक दूसरे को मिठाई खिलाती हैं।

(परदे के पीछे से)
बोले स्वतंत्र भारतमाता की जय ! महात्मा गाँधीजीकी जय !
देशबान्धवी दुब्बूटि सुब्बम्मा की जय !
(नारे, मंगलवाद्यों के बीच सुनाई दे रहे हैं।)

सीतम्मा : सुना माई ! वह जयजयकार ! वे मंगल वाद्य ! वे आनंद एवं उत्साह से भरे गीत किस तरह तुम्हारा गुणगान कर रहे हैं।

पे. सुब्बम्मा : महात्मा गाँधी, नेहरू जैसे राष्ट्रीय नेताओं द्वारा देशबान्धवी के नाम से पुकारी गई हो तुम ! तुम्हारा नाम सार्थक हुआ। भारत देश में पहली बार जेल जानेवाली पंजाब-पार्वती के समान धैर्य एवं साहस से सम्पन्न आन्ध्र - महिला हो तुम। मद्रास में अंग्रेजों द्वारा प्रतिष्ठित "नीत" की मूर्ति को हटाने में ब्रह्माजोस्युल लक्ष्मी नरसम्माजी के साथ मिलकर तुमने जो सत्याग्रह किया, नारी समाज मात्र के लिए आदर्श बन गया। तुम्हारी जिद्द, तुम्हारा धैर्य, साहस समूचे भारत के लिए गर्व के कारण हैं। तुम्हारा वाक्चातुर्य एवं तुम्हारी भाषण शक्ति, चेरुकुवाड नरसिंहम, दुग्गिराल गोपालकृष्णय्या की बराबरी करने के लायक है। माई सुब्बम्मा ! तुम्हारा जन्म सार्थक हुआ। तुम्हें जन्म देकर यह भारत भूमि कृतार्थ हुई।

पे. सुब्बम्मा : धन्य हो माई ! तुम धन्य हो। स्वतंत्रता प्राप्ति में तुम्हारा बड़ा योगदान रहा। सुहाग के उजड़ जाने पर अनेक सामाजिक दुराचारों का शिकार

बनकर भी तुमने उनकी परवाह नहीं की। अपना दुःख अपने में ही छिपाकर देश-हित के लिए तुमने कदम बढ़ाया।

सीतम्मा : सुखचैन छिन गया। सुहाग के चिह्न उजड़ गये। घर से बाहर कदम रखने की मनाही थी। घर का सारा काम-काज करना और काली कोठरी में पडे रहना ही विधि का विधान बता कर तुम्हें मजबूर किया गया। लेकिन देशभक्ति तुम्हारे रग-रग में भरी हुई थी। अतः तुमने उन सारे नियमो-बन्धनों को तोड़ डाला। त्यागमूर्ति बन आंदोलन स्फूर्ति से महात्मा गांधी जी की शिष्या बन सत्याग्रह किया।

पे. सुब्बम्मा: आंदोलनों का संचालन किया। कस्तूरबा गाँधी के समान यश प्राप्त किया। प्रकाशम पंतुलु, पट्टाभि, बुलुसु साम्बमूर्ति, चिलकमर्ति, काशीनाधुनि नागेश्वरराव जैसे महान् नेताओं के बराबरी का दर्जा पाया। तुम्हारा जन्म धन्य है! माई धन्य है!

सुब्बम्मा : बस, बस! बस करो तारीफ। मैंने क्या किया ? मुझे उन महान नेताओं के पद-चिह्नों पर चलने का अवसर मिला। धन्य भाग्य मेरे। स्वराज्य मिलना बड़ी बात नहीं है। सारी कठिनाई तो अब है। हमारे इस भारत देश में अनेक प्रांत और अनेक भाषाएँ हैं। इन सबको सम्हालना होगा। भिन्नता में एकता लानी होगी। हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई आदि धर्म परक भेदों के बारे में भी हमें सजग रहना चाहिए। हम आशा करते हैं कि नेहरू के नेतृत्व में भारत आगे बढ़ेगा।

सीतम्मा : भारत अवश्य आगे बढेगा। लौह पुरुष वल्लभ भाई पटेल तो हैं ही।

(परदे के पीछे से)
महात्मा गाँधी जिंदाबाद
देशबान्धवी सुब्बम्मा जिंदाबाद
आवाजें आ रही हैं।

सुब्बम्मा : पहले आर्थिक स्थिति के बारे में सोचना होगा। अंग्रेजों के शासन के कारण अत्याचारों के कारण भारत की इस सुसम्पन्न भूमि में उथल-पुथल

मच गया। दुश्मनों ने हमारी सारी सम्पत्ति लूटकर अपना देश भर लिया। आज देशभर में दरिद्रता ताण्डव नृत्य कर रही है। कारखाने तो हैं नहीं। हर तरह से पिछड़े हुए देश में समृद्धि लाना कोई मामली बात नहीं है।

पे. सुब्बम्मा: यह सब हम कैसे सोच सकती हैं माई ! ऐसी मेघा सम्पत्ति तो तुम्हारी है। हम तो केवल अनुसरण मात्र कर सकती हैं।

सुब्बम्मा : इतना ही नहीं, इस देश में पुरुष ही पढ़े लिखे नहीं है। स्त्रियों की हालत तो हम सब को मालूम है। इनकी नादानी ही हमें और पीछे ढकेल रही है। सारी स्त्रियों को शिक्षित होना चाहिए। विवेकानन्दजी की अपेक्षा के अनुसार सारी स्त्रियों में चेतना आनी चाहिए। महात्मा गाँधीजी की अभिलाषा के अनुसार सही मायनों में स्त्रीजनोद्धरण होना चाहिए। महिला पाठशालाओं की स्थापना होनी चाहिए। स्त्रियों को शिक्षित होना ही नहीं बल्कि स्वावलंबी भी बनना चाहिए। तबतक स्त्री समाज में सच्चा सूर्योदय नहीं होगा।

सीतम्मा : सच है माई ! तुम्हारी बातें साकार होनी चाहिए।

सुब्बम्मा : प्रार्थना श्लोक आलापती है।
भगवान् को इस देश की रक्षा करनी है।

सीतम्मा : भगवान् रक्षा करेगा या नहीं, लेकिन आप जैसी स्त्रियाँ जब ठान लेंगी तब इस देश का उद्धार अवश्य होगा।

सुब्बम्मा : हाँ सीतम्मा ! सही बात कही तुमने। नेतागण अहिंसा मूर्ति बन निस्वार्थ भाव से सेवा करेंगे तो देश आगे बढ़ेगा। कष्ट दूर होंगे। हम पार पा लेंगे। हर एक नेता को चाहिए कि वे इस देश को अपना घर मानकर सच्ची सेवा करे। वो अच्छे दिन अब जल्द आनेवाले हैं। आशा करेंगे कि वो दिन जल्द आएँ।

(परदे के पीछे से)

मादी स्वतंत्र देशम

मादी स्वतंत्र जाति

गीत सुनाई दे रहा है।

सुब्बम्मा, सीतम्मा, पे. सुब्बम्मा मिलकर गीत आरंभ करती है।

नमो हिन्दुमाता ! सुजाता
नमो जगन्माता
विपुल हिमाद्रुले वेणीभरमुग
गंगायमुनले कण्ठहारमुग
घन गोदावरि कटिसूत्रमुग
कनुलकु पण्डुवु घटिंचु माता ॥ नमो ॥

सीतम्मा : अब हमें और क्या चाहिए माई !

सुब्बम्मा : हमें और क्या चाहिए ! इस देश के सौभाग्य से बढ़कर हमें और क्या चाहिए।

अब हमें अपने देश का उद्धार करना है। अपने देश की सेवा करने का समय आया है। अब भारतवासियों को सुख और शांति मिलें। भारत देश की कीर्ति दसों दिशाओं में फैले।

ॐ - शान्तिः - शान्तिः

जय हिन्द

समाप्त